

**स्वतन्त्रता
री
जोत**



स्वतन्त्रता री जोत
(काव्य)

(डॉ.) ब्रजनारायण पुरोहित

राजस्थान एज्युकेशनल स्टोर
बीकानेर

स्यत्व : ब्रजनारायण पुरोहित
पैलो संस्करण : वासन्ती नवरात्र स्थापना, वि. सं. २०४४
भोल : ४० रु. (चाळीस रुपीया)
धावरण : पं. आसाराम गोस्वामी, बीकानेर
मुद्रक : जवाहर प्रेस, बीकानेर
[राजस्थानी भाषा-साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर रु.
(एक हजार रुपीया) धार्मिक महयोग सू' प्रकाशित]

SWATANTRATA RI JOT by Dr. Brij Narayan Purohit

Price : Rs. Forty only

समर्पण

माँ सरस्वती देवी
रै
श्री चरणां में सादर

~~विजयारावण~~ पुरोहित

पस्तानो

मानव-मन री विचार-वीचियां साहित्य-सरजण हेत भावभोम वण'र विविध आयामी निर्माण-प्रक्रिया नं सक्रिय करूं । सामाजिक, सांस्कृतिक अर ए तिहासिक परिप्रेखमें रचित कृतियां सूं ही इतिहास री सामग्री परिपुस्ट हुवै ।

जळमभोम नै मुरग सूं भी महती, रुडी-रूपाळी मानणवाळां जूंभारां स्वतन्त्रता री जोत नै ऊजळ अर अखड राखण खातर आत्मोत्सर्ग करण नै तप-त्याग अर बलिदान, साहम अर वीरत्व नै आपरें जीवन में सदीव अंगीकर कीनो है । आजादी री भावना सूं वीरोज्यो वीर-भाव चिरकाळ सूं अजस्य रह्यो है । जद-जद देस माथं हमलावरां रो कुदीठ पडी, 'भायड-भू रें लाडलां डट'र सामनो कीनो अर हँसतां-हँसतां प्राणां री बाजो लगावंता हुँकार अर संखनाद कीनो । वां रो अक ही घेय हो- 'आजाद हुवै जननी म्हांरी ।' भारत माता परतन्त्रता री सांकळां में जकडीजगी अर परवसता सूं करावती हो उण वखत सूं ही आजादी रें दीवानां बलिपथ रा राहो वण'र आपणो करतव निभायो । वै इण रास्ट्र-यग्य में साकळ हुय'र स्वाहा हु'ग्या ।

पाणीपत रो वेदि में जद परवसता री काळो छाया भारतमाँ री ओर प्रसार कर रैयी ही उण समै सूं ही रणबांकुरा रुद्र रूप धार'र ताण्डव करण लाग़ा । आजादी री लडाईं रो लाम्बो इतिहास रूंगटा खडा करे अर पग-पग पर माथा अरपण करणियां रो याद आवंता ही स्रद्धा सूं सगळा नमन हुवै । इण यग्य रो समापन पनरें अगस्त, सन् उगणोस सी संताळीस रें दिन मानीजें पण अमली काम फेरूं ही सेस रह्यो ।

वोरां रो पवीत चरित ही इण काव्य रो कळेवर है । राजस्थानी साहित्य रें निरमाण-काळ सूं अजूं ताईं लिखीजणवाळें साहित्य में जूंभारी भावना दूध में रळियोड माखण ज्यूं सगळी ठोड व्याप्त है । देस, धरती'र

कुल-मरजाद की रिच्छा करतां थकां माथा कटावणियां अर बलिपथ रै राही मा' पुरसां की कमी नीं रही है। आ वात साँची है कै जूँभार सबद सागं अक इसै सूरमं रो चितराम आख्यां आगं उभरै जको समरभोम में सीस कटियां पाछे भी लड़तो रै'वै अर करवाळ छोड़ै नहीं। पग पाछो दियण की जिणां नै आण हूँ अर 'गुलामो' सबद नै जका गाळ गिणै।

स्वतन्त्रता सारू असंख्य सूरमा हरखावता थकां सहोद हुग्या। बां कितरा कस्ट सह्या-उणां रो बखाण करण की सगती किण में ?

इण काव्य में पनरै प्रकास है। नानारंगी जोतां इण मे जगमगावै अर प्रकासमान हुवै। पैलै प्रकास में वीरां रै सुभाव रो-आजादी रै दीवानां रो गुणगान है; वीर-भाव रो बखाण है। इणी भाव नै सजोयो है आगे रै 'प्रकासां' में। स्वतन्त्रता-आन्दोलण की अमोल मणियां की चमक-दमक जग-मगाहट करै। पनरै अगस्त, जगणोस सी सैताळोस रै दिन भारतमाता रै 'बोध-कथण' (आसीसां) सूँ इण काव्य रो समाहार हुयो है। बां कह्यो-

“सगळा हिळमिळ आणेंद पावें
सगळा मुख-दुख में अक भावें
वस, रिच्छकरण आजादो
सगळां मन हुयसै सद्-सभावें

आजादो रै इतिहास रो तानो-वानो बणावणियां दिव्य-पुरसां की गाथा लिख'र आ लेखणी धन्य हुई है। बां की प्रेरक-सगती ही इण में साकार हुई। उण आदरजोग जोतां नै कोटी-कोटी प्रणाम !

वासन्ती नवरात्र स्थापना, वि.सं. २०४४

ब्रजनारायण पुरोहित

क्रम

१. वीरां गुणां वखाण	१
२. पावन-प्रताप री आण	८
३. हल्दीघाटी री याद	१६
४. आयम्यो तमतमाटणो सूर	१६
५. शिवा रूप साकार	२७
६. सगती लिछमी सार	३२
७. घर्म री फेर जगाई जोत	४१
८. राष्ट्र-आन्दोलण री हृद नीव	४५
९. सुमरणै जळियांवाळो-बाग	५३
१०. जोस जद हुयग्यो उजळो आग	६१
११. सीख श्रद्धानन्द जी रो साख	७७
१२. केसरी-जोरावर-प्रताप	८८
१३. गूँज भारत-छोड़ो री छाप	९५
१४. रटण रट खून करो बगसीस	९९
१५. प्रकासी स्वतन्त्रता री जोत	१०६

वीरां गुणां वखाण -

पावन प्रताप नै कर प्रणाम
सुभटां दिव्यां रो नांव लियां
सुभ स्वतन्त्रता रो जोतां सूं
अज्ञान-तिमिर रो ध्वंस किर्या ११।
कर भारत-मां रो याद खरो
चित्तोड भाव रो लियां छियां
सगळां अमरां नै नमस्कार
नित काम सरै जिण ध्यान वियां १२।
वां राजपाट-वैभव सुख सूं
मायङ्ग खातर वैराग लियो
निय दुःखां सूं अणवाकिक हुय
आजाद हुवण रो नेम कियो १३।
दर-दर भटक्या नीं भुलया कदं
ते तण्यां मेर उपमा ताई
लंकाळ सूर नाहर सिरखा
जिण हाथाळ लाली छाई १४।
वै मायङ्ग-लाल धकाधक कर
मां रो बेङ्ग्यां नै काट करे
कितरां विमुणां नै भेज सुरग
मन मोत चिढ़ाणां सत्र डरे १५।

उण नै मरणे रो कोड़ घणी
 वै कूट करै जमवूतां रो
 अँ कदे न डरणा अरि आगं
 रे ! पदवी पाय सपूँां रो १६।
 रण दूध ऊजळ जामण रो
 चढ़ रण-सय्या आराम करै
 जण इसड़ा रावत जळमभोम
 जिण बंका-डंका अमी भरै १७।
 वै सतवन्ती रा वर बालम
 हर घड़ी खुमारो द्याय रही
 कद चूकै मौकै टोकै नूँ
 कुण परवस उण रो मात करी १८।
 मां व'नां रो सुभ वातां नै
 अँ कदे न भूलै आराणै
 चुंदड़ी-पंवरी रो रंग चढ़ै
 भू . कदे न कस्टै भाराणै १९।
 रिण भार उतारै भूमी रो
 अत्याचार्यां नै खूंद - खूंद
 कुण वसुधा उण ~~री~~ दाव करै
 उगरावै पाछी बूंद - बूंद १०।
 वै नाहर सिखी बळसाळी
 दानी वारिद - रूखां जिसड़ा
 ज्ञानी - वैरागी - प्रणपाली
 आज्ञाकारी रावत इसड़ा ११।
 वै भड़ भड़ भड़ वाचाल नहीं
 धिन साजन मुनि इम व्रतधारी
 सै काज जगत रा सूधा सट
 उण रो निजरां नीं भ्रमकारी १२।

भड़ भार ऊतरै धरणी रो
 खल - दुस्टां नै कर चूर - चूर
 कुण इला उणां रो दाब करै
 उगरावै बण वै सूर मूर ११३।
 खंगड़ हद पूत सपूत खरा
 माता रो खुसियाळी ? चावै
 सट सहिर - पसेऊ सींच - सींच
 मायड़ - भू रो जस उजळावै ११४।
 रण रात-दिवस ही लाग रैया
 जननी रो जस वरधापण नै
 पच नई रोसणी परगासै
 नित बगमगकारी कण - कण नै ११५।
 नौं स्वारथ मन रै अरमाणै
 कद घोर - वीर भुकणैवाळा
 पण पद - पद पर टक्कर पाणै
 मर आण - माण मूँछांवाळा ११६।
 वै कज्ज करै हुय मतवाळा
 कुण हुय बाघक उण राह अड़ै
 कुण भीचु सामनै कूट करै
 पेखत जमदूतां आह पड़ै ११७।
 जिण रै पयाण माचै कळभळ
 रिपु गिणै जिणां नै महाकाळ
 सुण नांव नास दै सगळो वळ
 सागर गिणनो कद ताळ - पाळ ११८।
 हुंकार करंतां वीरां रै
 कुण सामो जीवै लालकंवर
 जिण जिन्दगाणी सू' मो' नहीं
 भड़ रण में दीसै कंवर - भंवर ११९।

वे आरावळ सा अडिग वणे
 सायर - सी गूँज लै'र - लै'र
 वडवानळ नें कुण रोक सकें
 चूकें नीं, लेवें तुरत वंर ।२०।
 वे कदै न मूरत रें वस में
 वर मूरत कुंत - क्रिपाण बीच
 सहू घडी सुलपणी मुखदैणी
 कर विजे करे अरि माण कोच ।२१।
 मायड रो दूध ऊजळण रो
 नित ध्यान राखणा आराणें
 उण रें जीवतें निहचें रह
 भू कदै न रेंवें भाराणें ।२२।
 जद सेना रो बाढन्त जोर
 कुण रोक सकें मारगियें में
 जिण लक्ष्य अक ही धार लियो
 फणि कूण पकडलें वगियें में ।२३।
 जद अक करे फूँकार जाय
 उण विस उतार नीं कह कोई
 वे घाव हवक्ता वीर वरें
 निहचें कीरत जग में होई ।२४।
 किनरी मां - वेंनां हेंस - हेंसनें
 लालां - भायां नें विदा किया
 छितरां-छितरा पिमुणां नें छिनि
 जीवन - जस रो वें जाय जिया ।२५।
 हर घडी एक रट लाग रही
 सिधू - सिधू सुभ गाणो है
 अरि पीठ देखलें आराणें
 उण मूँ आद्यो मरजाणो है ।२६।

जद माता विलखै आसा में
वेटां - पोतां री हेज घर्यां
तद कितरी देर - अवेर तकै
पूर्ग वंधण नै काट कर्यां ।२७।
वै लब्बडघक्कै लेवण में
कद थोडी देर - अवेर करै
नी तैयारी उण वीरां नै
दाकाळ्यां मिरतु - लै'र भरै ।२८।
उण आंखइल्या रो तेज उरै
मूँछां तम नै सच सेत करै
पण लालइली घण आस पास
सर - रुहिर हबळकां हेत सरै ।२९।
भड चालै जद वमुघा कांपै
कांपै थर - थर हिय काचां रा
ते आंधी - पांणी - तूफानां
नी गिणै खबीड़ा टांचां रा ।३०।
रिभ सरवारां अर कुंतां री
घमरोळ मोकळी देखीजै
तद काळजिये री फोर तेज
पग मांड राइ भल पेखीजै ।३१।
जद सात तुपारां रै पावां
जाणं वेड़ी पड़गी काठी
रुक केम करै लाचार रवी
मोवै घोड़ां चालै माठी ।३२।
खं आकासं छावं खं - खं
दीसं सूरज जिम दड़ी - दोट
किंवा भतूळिये गण कट्यो
मोटो किन्नो लोटंत छोट ।३३।

पण मीचु खडी पग मांड पास
 निय जीब लपालप लाल करै
 श्रै गरवीला भड ऊभ - ऊभ
 उच्छ्राव करन्ता चाल ठरै ।३४।
 जम भरता मारै सहस जणां
 सत घावां रो घमरोळ सहै
 कुण उफ उण मूंडे सुणी कदै
 वाळा रण - खेतां रुहिर वडै ।३५।
 वै घन रै चक्कर में न कदै
 निय काया नै चकरी करणा
 रे ! माण मोकळो मायड रो
 कर फरज कजा सपरी मरणा ।३६।
 वपु पांच तत्व रो पुतळो है
 आ बात उणां हिवडै घारी
 आतम - नत रो गीता बांची
 कुण मारै - काटै बलकारी ।३७।
 जद मरणो है निश्चै जग में
 कुण अमर वपु सागै लेग्या
 मारग अपजस रो महामीचु
 रण पीढ वीर सांची कंग्या ।३८।
 पण नांव अमर जग में पैला
 मरणो . जस अमर सबाय मिळै
 किम तरै चिरमियां मोत्यां छिव
 भेडां सेरां सू' केम भिळै ।३९।
 कितरां वीरां रो रुहिर वै'यो
 कितरी लासां भूमी पाटी
 कितरां लंकार्ळां . रा पंजा
 काठी मां रो वेडी काटी ।४०।

धिन-धिन उण लंकाळां धिन-धिन
वड मातावां पर बलिहारी
जिण पूत - सपूतां नै जाभ्या
चहुं ओर करै जय - जयकारो १४१।



पावन - प्रताप री आण

२

परवस जद भारत - भू हुयगी
मुंगलां री फौजां आय जमी
राणा सांगा री मेट आस
बाबर - तळ हेठ जाय थमी ।१।

जद पाणीपत री वेढि वीच
दुरभाग आवंतो दीस हो
धीर - धीर बड काळ रात
गळत कागद जिम फीस हो ।२।

जिण माण - पाण राखण चाही
निय असु री परवा कद न की
खिण-खिण खिण प्रल भाचणो रवि
हा ! आथम री तयारी ही ।३।

कुण भार सांभमी मायड रो
कूण हाथां कुंत - कृपाण करे
कुण घूमन्तै मंगळ - जिम जा
महती वीरां रो मोचु मरे ।४।

हा ! आज बूडत कुण काढे
दृढ नक्र - सूर दातांवाळो
किण हातां रिच्छण डोर छोड
कुण भार सांभसी मतवाळो ।५।

जद कवळ अकला जवामद
टकरै दंताळी पार करै
कुण सामै टक्कर रै टिकणो
जिण देखण लोही - जाळ भरै ।६।
सांगाजी लोक पयाण कियो
सगळां सूर्रा मातम छायो
हडकण-बडकण ओ कीं हुयग्यो
दुःखां रो दधि सामो आयो
श्री उदंसिघ बँठन्त पाट
भगडां - टंटां निय राज कियो
किण घडी जिळमियो वो नाहर
दुखडां सूं अलग न होय जियो ।७।
पण फेर पळटियो पाट - पटळ
श्री प्रताप गादी सोभ करी
मख - तेज ऊजळ तमी मेट
उगतै सूरज री ओप घरी ।८।
सगळां आसावां नेक धार
मन घण उछाव लै रण लागो
अर पळळ - पळळ तडिता आभे
चमचमाट कर सीधू वागो ।९।
वो कदै न भुखिया अरि आगे
मेवाडी माण सवायो हो
वो रीत - नीत रो वारिध - वर
जस भारत - मात वघायो हो ।१०।
उण भ्रूहां मूछां मोड़ कडी
तण रुहर रूप हवीड़ करै
सांकरडां रै वन सूकै में
धक दावानळ कुण जाय घरै ।११।

वो रात - दिवस सोचै मन में
 मायड़ रो करज उतारूँला
 जिण जळम दियो पोपण करियो
 हं दीनो वैण निभाऊँला ११३।
 मां ऊभी तामै सूक मोन
 किचित नीं मुख सूं वैण करे
 खुसियाळी हुयगी निपट खूट
 चख - मग मूं सावण धार भरें ११४।
 निय दुखियारी माता नै तज
 कुण वीर पूत भड़ है वाजें
 जद ग्रामूं मां रैं चखां भरें
 लख भोम सपूती है लाजें ११५।
 घीरज - साहस दृढ़ निस्वयता
 अर जळमभोम री खुसियाळी
 उण वड़ें त्याग मूं नेम कियो
 पातळ मायड़ - हित प्रतिपाळी ११६।
 रण - माटी रो हृद वज्र-रूप
 कद दुख - भंभा डगमगवाळो
 लठ हियो अड़ावळ अडिग लियां
 मच चढगयो नाहर मतवाळो ११७।
 अन्यावां नै कद सहै अडिग
 अं आण - माण करणवाळा
 नीं कदै अडोकै मीके नूं
 मन चढ़े खुमारी मतवाळा ११८।
 पावन - प्रताप रो नांव पेल
 चख-मग में चपळ चौघ जावें
 भट, चरण-कंवळ सिरिसीस भुक्त
 सरघा रा भाव हिये छावें ११९।

राणा सागै वै बाल - रवी
 वन-वन री खाक खूब छाणी
 अर जगमग रै कारण सूं अण
 जीवण हरखाणी कद जाणी ।२०।
 कुम्भळगढ़ में बाळापण वय
 चितोड़ पूगियो नर - नाहर
 तळहटी दुरग में डेरा दे
 वर यूथपति कंवळा - डाहर ।२१।
 भीलां रो हो हितकर भीडू
 जगळां सूं उण घण हेत कियो
 वन-वन भटकयो पण भुक्कयो नही
 वो कद मुख री जिन्दगाण जियो ।२२।
 सिध जन-जन में इतरो घुळग्यो
 जन नै जनता सूं अक भाव
 खाणो - पीणो सागै सहू रै
 सपरो सगळां हितकर सभाव ।२३।
 वत्तीस वरस री वय में वै
 कांटां-जड़ियो सिर ताज धर्यो
 पनरै सां वोवत्तर में पण
 भल पाट उदंपुर नाज कर्यो ।२४।
 पुज सिसोदियै कुळ तेज प्रगट
 जस घवळ प्रकास्यो हद भारी
 कछवाही - साही कटक-कटक
 ह्यारी वेड़ी री की सारी ।२५।
 समराटां रो वो सहनसाह
 वो सिध - केसरी बलसाळी
 घन-स्वारथ रो नी धर्यो ध्यान
 बाजी उण अक हाथ ताळो ।२६।

पण जठे मानसिंध मूँछ पाण
 मेवाड़ी पाग पगां चाही
 उण कूट नीत री पाण आण
 साही खिदमत लाली छाई १२७।
 मुख कूटचाळ रं घणी मान
 पातळ सूं मुळै करण चाही
 संदेशो नमन करावण रो
 साही फरेमायस पूंचाई १२८।
 पण घरम - घुरीणां में प्रवीण
 भल तेज किसानू सुभ पबीत
 मरवस होमै पण भुंखै नही
 डूंगर धारै कद शोष्म - सीत १२९।
 जद चोट पड़ी सदेसै री
 भुखणै री स्रवणां सुणो गाय
 तणगी मूँछडल्यां बरकडली
 हूं - हूं ऊमडतै तण्या माथ १३०।
 कुण ताखांरै विस रो पाचक
 कद ना'र हिंरण - घर नीर भरै
 कुण तेजडुळा भट वीरांरै
 सामी छाती ललकार करै १३१।
 जद हळकारै सामो देख्यो
 इक तप्त मूँछती आगै ही
 आंख्यां सूं अंगारा चम चम
 काया भड - आतम बागे ही १३२।
 सदेसै रा छरुड अरुखर
 मुणतां गज्यो किम नेत्रे टरुं
 कुण माण घटावै मायड रो
 हू भम सूं जुघ में नही डरुं १३३।

हूं करी प्रतिग्या सह सुणलो
 इक्लिंगजी नेम निभावैला
 साही दरवारै जीतै - जी
 ओ कदै न पातळ जावैला १३४।
 चांअ तजदे रवि तप्त-भाव
 सीतळतां नै निसिनाथ तजै
 पण भाणवंस रो ओ पातळ
 भो ! कदै न अकबर नांवे भजै १३५।
 वाळू सू निसरं तेल मला
 मिसरी तज दै निय मधुर भाव
 दधि तैर पार उंठ भल करलै
 नी पातळ पळटीजै सभाव १३६।
 सूरज पूरब में ऊगणियो
 चांअ पच्छिम में उदै होय
 पण सूर्यवंस में उपजणियो
 जोणी चावै नी भार डोय १३७।
 हूं जिण भूमि पर जळम लियो
 उण रै खातर मर जाऊंजा
 नीं आस करे अकबर म्हारी
 नां जीवित दिल्ली आउंला १३८।
 नी दूध पियो हूं लांकडु नी
 हूँ सिघणी रा थण पान क्रिया
 उण जैर लिपटिये आंचळ में
 किनरो जीणो, कुण अमर थिया १३९।
 जद अंत दिवस तो जाणो है
 तद वारवार क्यूं मरण सहूं
 हूं नमन करूं एव लिंगजी नै
 वन्दगी अकबर नै केम कहू १४०।

यस, आज आखरी निरण है
 इव कदै न सदेसो कहसी
 कच्छावां-कुळ रो कंवर मान
 निय ठोड़-ठिकाण ही रहसो १४१।
 हूं कदै न घमवयां सूं डरणो
 नी सुख-दुख में चख भेद करूं
 मायड़ रें दुख सूं दुखी मनां
 हूं पातक सूं घट नही भरूं १४२।
 है मान अक पथ रो राही
 हूं बीजं पथ री राह करी
 किम भळ करूं तप-तेज कदै
 कुण दुज-बारस इक ठोड़ चरी १४३।
 आ बात सुणन्तां दूत गयो
 उण अरावळ सो अड़िग जाण
 मन ही मन नमन करंतो वो
 हिय जाण प्रकास्यो तेज भाण १४४।
 अर सायर गुहिर अनळकारी
 हद ज्वार हिये मे माच्यो हो
 भट हाव लेय निय मीत कुंत
 चख तडित चमाचम राच्यो हो १४५।
 हूं आज ऊजळूं धवळ जसां
 रज-मेदवाट रो प्रजळाऊ
 भल भारत-भू रो वची लाज
 हूं असि-कुन्तां सूं उजळाऊं १४६।
 परवस ह्य जग में जीणें सूं
 आछो सपरो मरजाणो है
 श्री नूतो दोधो मान इसो
 सीधो नरकां-घर जागो है १४७।

कतरो-कतरो उण लोहू रो
 मायड़ रो फरज उतारैला
 सिव इकलिंगजी रो सांय सदा
 वै ही वुघ - वल दे तारैला १४८।
 वस अक अरज है इष्टनाथ !
 सदबुद्धी मम मन वसै सदा
 इण अस्थिर काया माटी नै
 कुड मो' - माया नीं कसै कदा १४९।
 म्हे तन - मन लूं हां साथ नाथ
 सहू साथ्यां भट हुंकार करी
 अर हूं - हूं सूं आ धुन उमटी
 हामळ सगळां टंकार भरी १५०।
 सहू अक भाव में बोरीज्या
 सगळां हिवड़ां में ज्वार भर्यो
 वस एक हिलीडें कट कगार
 सगळां कर नमन जुहार कर्यो १५१।



हल्दीघाटी री याद

भारत - भू पर भामणा
 आ अमरां मन भाय
 इण रै खातर मानखो
 प्राण अरप सुख पाय ।१।

राजस्थानी भोम री
 हरियाळी हरखाय
 सूरं वीरं री सदा
 फूलं फसळ फळाय ।२।

वीरं री वीरापणो
 काट बंधाणां काट
 पातळ जस पायो परम
 प्रकट उदैपुर पाट ।३।

हल्दीघाटी नांव सुण
 रू - रू उमगं जोस
 वीर पोढिया तोपणा
 मान करण निरदोस ।४।

वीर लड्या हित देस रै
 अक - लक्ष - इरु - भाव
 खांडां तरवारां खणक
 जोस भर्यो साभाव ।५।

वीरां रो वीरत्व वर
वीर भाव साकार

मा'राणा पातळ महा
बढचा करत हुंकार ।६।

घम-घमाका वीचि में
फटाफट घड़ धाड

महाकाळ रो रूप घर
पिसुण—कळेजां फाड़ ।७।

सोनळ घरती कारणै
जळमभोम हित घाय
घणी वीरता सू लड्या
सूरज पदवी पाय..

पनरै सै छीयन्तरै
रण रच राखण मान्

अमर नाव जग में कर्यो
हळदीघाटी थाण ।६।

घोसर चूकं नीं कदा
वीर न दूघ लजाय

पग पाछो पण दियण रो
मन वीरां नीं दाय ।१०।

हँसता-हँसता भल भिडचा
जळमभोम प्रजळाय

रगत—रंग्यै जस घवळ नै
केम वखाण्यो जाय ? ।११।

भारत भू रा लाडला
माण पाय भरपूर

काज देस रै कस्ट सह
सूरज जिम तप सूर ।१२।

आथम्यो तमतमाटणो सूर -

४

जीवन ! तू कित्तरी घोखो है
 तू खांड लपेटघो काळकूट
 तू सरसर करतो वै जावै
 सगळो सुहिणो भूट जाय दूट ११।
 खिण अवस करै पूरो खिण-खिण
 पळ-पळ घडियां री चूट-चूट
 म्हारै-घारै उळभाव भरघो
 जीवन रो घडियो जाय फूट १२।
 जीणै-मरजाणै में हां तो
 कुण जीवण री मैभा जाणी ?
 कूकर-सूकर सम श्रेम जेम
 कर लटवा कूड खाक छांणी १३।
 पण पडै जावणो श्रेक दिवस
 राजा-सेवक नर-नार धीर
 घुण टाळ सकै प्रतिसर्ग घडी
 धुर जोद्धा चाश्रे श्रतुळ धीर १४।
 काळजियै में वा हक करै
 उण नांव लेवता उठे पीड
 वा रात गिणै नीं दोपारै
 अकान्त गिणै ना गिणै भीड १५।

छांनै-श्रोळें वा नीं छोडें
 छोड़ें ना वा मिन्नत करियां
 पण पकड़ पछाड़ें वादें पै
 आ तोड़ें तिणकें री बरियां ।६।
 ज्यूं श्रेक लसरकें माछर नें
 जमलोक भेजदें मारणिया
 ज्यूं कीड़ी-माखी मारण में
 नीं सोच करे पापी हणिया ।७।
 पण काळ गिणें नीं पाप-पूप
 वो आय बळें अणनूतें ज्यूं
 दम टेम खिणिक ही नीं देवें
 डरपें सगळा उण दैत्यें स्यूं ।८।
 लपलास लपलसी रसना नें
 लड तोड़ सकें कुण वांकड़लो
 सिघ-वज्जर रें पंजा बिच सूं
 भिड़ बच जावें किम लांकड़लो ? ।९।
 जिण री अदीठ गर्जन सुणनें
 भट होसो-सांस कूच करदें
 ऊंचो-नीची धुग-धुगी हुवें
 रग-रग में रोग-सोग भरदें ।१०।
 आंश्यां दीठें घण अंधियारो
 जोती ना टिकें परी जावें
 टूटें बाणंक्को नाड्यां रो
 हा-श्रोय कियां वचणो चावें ।११।
 जिण गळपटियो गळ में धार्यां
 नाहीं निय जिन्दगाणी गाळी
 सच डाकी ठाकर राग-सरस
 भल पाळ स्वतन्त्रताई पाळी ।१२।

जिण सह सुख्खां रो त्याग कियो,

दर-दर भटक्यो पर्ण, मुक्यो नही

हृद आरावळ रो अडिग हियो

जीवण दुखडां सूं सुक्यो नही ११३।

जिण ललकार्यो वैभव-सुख जद

संघरसां री मुभ पाळ रळी

कस कफण बांधियो केसरिया

फळ कोमळ फळ री कड़ी फळी ११४।

मच गिणं मीचु नै माखड़ली

सो कदं न डरपे ढक्कण सूं

क्षण वीरां नै घडिया इसड़ा

कुण ढक दे उण नै ढक्कण सूं ११५।

खुल्लम खारा वै खेल-खेल

नित कूट करे जमदूतां री

जोवै वै रात-दीह जिणनै

करणो कुण होइ सपूतां री ११६।

वै तपे सदा निय तेजां सूं

कुण देख सकै सामो उणरं ?

वै निजर गिडावै जिण वेळा

घरती थम्मै भटकै फण रै ११७।

कच्छप री पीठ हिलोड़ा लै

भूकम्प हुवै टंकार भरघां

फण सेसनाग रा कम्पीजै

हड़कम्प उठै मनवार करघां ११८।

वै इतिहासां रै पघां नै

सोने रै अखरां सूं मांडै

वै नांव उजाळै जामण रो

फट नुंवां पगलिया भल छांडै ११९।

वै समभोतो नीं करै फदै
 नीं दुःखां सूं टरणैवाळा
 वै रात जिळमिया इसड़ी वर
 . . . महू . . . रै दुःखां हरणैवाळा ।२०।
 वो फडो रूप . कीकंजी रो . . .
 पूरण जगती हुवतो दीस्यो
 जिण खेल खेलिया दिव्य गजव
 . . . सिंघणी रो सीख खरी सोरयो ।२१।
 रे कंचन-काया महावीर रो . . .
 . . . अकड जकडती जावै ही
 वो दीप्त तेज च्यारू 'कांनी
 . . . अस्तंगत आभा छावै ही ।२२।
 वो तणियों वक्षःस्थळ रवि रो
 इव सिथळ मसोस्यो दीखै हो
 पण आंस्यां री वा आव चमक
 . . . विद्युत सरणाटे कीकै हो ।२३।
 मन उथळ-पुथळ धमरोळ मची
 भावां रा भाव तण्यां भारी
 चै'रै री वंकिम रेखावां
 उरम्यां रा ताव बण्यां खारी ।२४।
 सत भाव आयने हिवडै . सूं
 . . . जीभडली सूं टकराव करै
 पण आगो-पाद्यो देख-देख
 . . . भकभेण बारनै नहीं भरै ।२५।
 गिट गिटक-गिटक उण भावां नै
 . . . भकभोर दिया साथीडां नै
 कर बैठ-बैठ सोच करै
 किम गिणै सिंघ हाथीडां नै ।२६।

जिण रै पमाण हुवती कळवळ
जिण निजर माचती मीचु-जाळ

रत कीको सूरज भारत रो
भड़ वीरां री भळ खरो माळ १२७।

मछ सूनो आज थपेडां में
कीं भाव-वीचिकावां गै'री

जिण सुमन गिण्या असि कुन्त असु
वो काळो काळकट जै'री १२८।

खुद ताखां रो विस खरो-खरो
कुण उण री होइ करे सिरी

भल पत पर वैयो ऊमर भर
वै'ती सरिता आपे ठैरी १२९।

कीके नै अरज करी सगळां
मन-भावां नै कर रोक-राक

चख-मगां स्रोत भरतां-भरतां
पिघळे हिवडै नै ठोक-ठाक १३०।

जी, बडो हुकम फरमाईज्यो
कीं वात अटकगी कण्ठां में

ऊभा चाकर चरणां अरपित
मछ डरां न बीड़ण गंठां में १३१।

स्वामी हो म्हांरा धुर पवोत
हां बळिपारी श्री चरणां पर

सहु काळजिये री कोर-कोर
मच-माचे काटणा पिसुणा सर १३२।

प्रण करां प्राण-पण सूं पूरो
सिव इकलिंगजी री साख करां

नीं वादे सूं विमुहा नाठां
मेवाड़ी पाग न दांग धरा १३३।

जदताणी रत री अक पुटंग
रैसी-रैसी इण डीळ मांय
नीं वैण तोड जीणो चावां
चलती-फिरती लख छांव छांय ।३४।
प्रभु ! इतरी मै'र करो जल्दी
म्हे सैण सकां न देख पीड़
दो हुकम हणै माचां कळवळ
पिसुणां री करदां भीड़ छीड़ ।३५।
कीं गुना ह्यो भारी म्हांसू,
नीं कर्द छिपाई कर्ई वात
भल ह्यो किसो अपराध बड़ो
हां वैंठां सगळा अक छात ।३६।
सैं चावै इमरित वैण सुणण
स्रवणां रा पडदा उल्लासित
आंसू भारन्ती आंखडियां
हुयसी थां सुख सूं हुल्लासित ।३७।
आ वात सुणी धिर भाव कियां
असि-कुन्त निरख गंभीर ह्यो
अर छोड़ निसासा फूँकारण
राणा सह प्रमुखां मीर ह्यो ।३८।
भावां री लड़ी पिरोयां भल
गदगद कण्ठां सूं वैण भर्या
सह वैंठा सुणता चुप्पीकर
सुणणै उतसुक पूट-स्रवण करघा ।३९।
मद्धिम दीपक री घाट जेम
बुभती-बुभती घण परकासैं
दिप अंम बुभतो रतन-दीप
मुकती-मुकती अण-ऊजासैं ।४०।

वं तणं भुंवारं वेंण कहूयो
म्हारो ओ दोप कुण धारं
सुभ जोत जळाई जतसां सूं
तूफानां तरणी कुण तारं १४१।

धमरोळ - मचं - मन सोच घणो
की कहूं अमरसिंघ रं खातर
ओ टावर है, नीं पकयो अर्ज
नी सुख्खां रो सपरो पातर १४२।

सच वचन करं म्हासूं सपरो
कुण नीं सन्धी रो हांम भरं
जदताणी जिन्दगी में जिन्दगी
वंरो रा चक्का जांम करं १४३।

नी ताज कमल अर फूलां रो
ओ तखत न सुख री सव्या है
ओ राणा सवद न आरामं
पण सबसूं ऊंची मैया हैं १४४।
कुण भारत - मां रो दूध सुमर
कुण रजपूती ऊजाळलां
कुण भारत मां रो वदन निरख
बूठा वंर्यां रा बाळला १४५।

रिस वेंण कहूया अर राणाजी
चुप हुयग्या चाय पडूतर न
सगळां मुख अक बात आणी
नीं कदं हटां रण ऊतरनं १४६।
आथूणं ऊगै जाय रवी
चाअे ऊगळं ससि आग आय
चाअे चकोर पत नं तोडूं
पण म्हे पळटां नीं लगा लाय १४७।

इण जोनी नै प्रजळावालां
 पच तन - मन वारां मायड पर
 कतरा - कतरा खूं रा वंभी
 पण दाम लगें ना वेजड पर १४८।
 आस्वासण पाय प्राण - पण रो
 मुरभायो राणो फूल उड्यो
 जीवण मुक्ति पा मुखी - मुखी
 जग सूं मो' - माया वंध छुट्यो १४९।
 वो पूज्य लाडळो मायड रो
 मायड रो काज सही करग्यो
 खप जोत जळाई निपट खरो
 सगळां मन देसप्रेम भरग्यो १५०।
 मायावी मो'रें चक्कर में
 स्वाराथ रा वीज पनप पावे
 नीस्वाराथ जीवण त्याग करे
 उण नै नी कदं काळ खावे १५१।
 पावन प्रनाप रं नर - वर तनु
 पायो अमरत्व खरो जग में
 वो निपज्यो पूव सपूत खरो
 नीं भटक्यो जीवण रं मग में १५२।
 पातळ रो नांव अमर जग में
 जम उजळो दीप्त प्रकास भर्ग्यो
 वेदाग चमकणो धुर - प्रवीण
 सूरजवशी रवी पूत कर्ग्यो १५३।
 आंसूडा भरतो आंखडियां
 हकिया कण्ठां किम वैण भरें
 तत पांचू मिळ्यां पंच तत में
 अतुळित बळ रो कुण तोव करे १५४।

शिवा रूप साकार

५

सीस नवाऊं सूरसिरी
वीर सिवाजी वार
कदं न हिवडो कळुपियो
सिवा रूप साकार ।१।
सदा मुलपणो सोवणो
आजादी रो रूप
केम निभावं उण कदं
जबरदस्त जग - भूप ।२।
हियो मसोस्यो जद घणो
देख बंधणां मात
मोम वण्यो मन मोवणो
वणरयो वज्जर गात ।३।
आजादी री जोत वण
जीवण - नेह संजोय
वाती - भावां वीरता
असि - सू' जगमग होय ।४।
मन मौजी मन सू' कियो
मां , रो माण - सवाय
रिच्छक खुद सिवराज जद
कजा . कर्न कुण जाय ।५।

सदा सुरंगी चाल शुभ
भिड़े काळ सूं जाय
करै वीर हुंकार 'वम'
काळ न सामो आय ।६।

उचित न्याव रै कारण
जय - जयकार सदाय.

सहु घरमां समभावनं
द्वेस न किण सूं थाय ।७।

काळुपियां जद हद करी
जद सै हुयग्या भीन
उणी काळ में उमगियो
भीणे वारिद भीन ।८।

छोटे वपु हीमत छटा
किण विघ करूं वखाण
वामन - रूप घर्यां छळ्यो
अरि - बलि दुष्टा आण ।९।

अफजल खां री चाल कटु
चली न सामे जाय
पकड़ पछाड्यो केसरी
निकसी उण मुख हाय ।१०।

घणो क्रियो छळ हद करी
अफजल - अंग मक्कार
पण गरज्यो लंकाळ जद
अरु ऋपटै मार ।११।

सिघ सामे कीकर लड़े
सुसियो अर गजराज
हाथाळै हणनो हटै
अरुळ भिड़ अंगराज ।१२।

मायङ् देखें विळखणी

कुण इसडो जग - पूत

आसू जननी आख अर

देख बण्यो जमदूत ११३।

सागर - रण सरणाट में

धूँ - धूँ घूँवाघरु

कदे न कायरता करी

कर्या वार पै वारि ११४।

रामदास मिळिया गजब्र

गुह जिणर्न मंभीर

सिद्ध - दिद्ध गुटकी सही

समभ्र चलायो तीर ११५।

पोगातो वो तुरत ही

मां वैंनां निय ठोड

कदे न मन मंलो कियो

घिन - घिन ऊजळ मोड़ ११६।

अक दिवस री बात है

दीठ - राज दरबार

राजकाज - चरचा विचं

आयो इक सरदार ११७।

जीत - खबर सांभळ जदे

पेख साथ चकंडोळ

इचरज सूं पूछी विगत

बोल्थो पड़दो खोल ११८।

तोफो इण में तोसणो

मिळ्यो भेंट परमाण

आज जुद्ध में जीतणो

मूभ्र वघायो माण ११९।

इतरी सुण तेवर चड्या
 हुपभ्या चण - पट नान
 अगारा . बरसावंता
 हान करै बहाल १२०।
 माथै रा सळ फीलभ्या
 हाथ घरी तलवार
 रुं - रुं जाणै रोसणा
 मूँछा तणगी ना'र १२१।
 कडक उठ्यो भट केहरी
 रे घूरत मक्कार !
 दुष्ट करी घें दुष्टता
 डूब्यो काळी घार १२२।
 आ काळस घुपणी अरे !
 सोणित घार मंभार
 पण, पण पापी पापिया !
 भूमी माथै भार १२३।
 पापी, काळख पोतणा !
 क्रियो माप - आचार
 कींकर सामै इब खडो
 मरजा ओ लाचार ! १२४।
 केर मुखातिव हुय परै
 कंपित बोळ्यो वात
 माँ माफी देवो मनं
 दुष्ट करी घण घात १२५।
 म्हारी सम्मत . जे हुवै
 इण में रत्ती अक
 हियो चीर सामै घरूं
 टूटै नी मम टेक १२६।

आद भवानी प्रायने
 खड़ी उजाळी नूर
 माफ करो, मां थे मने
 गुनो हुयो भरपूर ॥२७॥
 मां माता अम्बा खड़ी
 आद भवानी रूप
 हू सिवहू जिनने सदा
 दुष्ट विदारं चूंप ॥२८॥
 म्हारी सगती किम करे
 सगती री रखवाळ
 थारं घर इष ही घड़ी
 पूगावै रिछपाळ ॥२९॥
 मां पण विनती अक है
 कष्ट हुयो भरपूर
 करो कृपा पावन करो
 करो पाप चकचूर ॥३०॥
 कदं न हू परवस बगूं
 मोमे मायड सान
 जळमभीष हिन अरप दूं
 रेवे मोती - पाण ॥३१॥



सगती लक्ष्मी सार

व्योपारी वण आवणवाळां
 अंग्रेजां री जद पोल खुली
 जद घोरं - घोरं होस कियां
 डाकी - डाकां भू डोल डुळी ११।
 उण सर्ग सहू आकळ - वाकळ
 खळवळी हियां माचण लागो
 किम करां केव सरणो क्णिण रं
 हुयगी आवाजां अति घाघी १२।
 पण रणजीतं सूं हार खाय
 रण हारडिग्ज सिक्का पाई
 वर - वीर खालसां बाकडळां
 गम मेट मान खुसियां छाई १३।
 पण डोर समेट्यां परल पार
 दुरभाग सामनं दोसं हो
 काळो छाया में इणग - विणग
 मरिभोडो वचियो फीसं हो १४।
 जद डलहीजी री कूटनीत
 लीगां नें अखरण नें लागी
 सुरसा जिम मूंडो फाड खडी
 मानवता पडगी पड दागी १५।

हृद राजकरण विस्तार घणो
 सासन रो चंदोवो छायो
 अंग्रेजां फूट करणआळी
 नीती सूं फंदोदो चायो १६।
 जद फूट पड़ी वांकडळां में
 भाई नै भाई काटे हो
 पिमुणां रा पांन पखारण पण
 काळजियो राजणां फाटे हो १७।
 लड़ जळमभोम रा लाडकँवर
 आपस में लड़णं री ठांणी
 उण समं वाड़ ही खेतां नै
 भवखण नै तरवारं ताणी १८।
 रंग - राग उड्यो भड़ वीरां रो
 निय खानदान री सुरत कियां
 तणगी मूँछ्यां मरदानां तद
 लड़ चावै बदळो तुरत लियां १९।
 उण आसावां विस्वासां नै
 किम कलम काठ री लेख करे
 जिण रो इतिहास लिखण खातर
 . रत रगत मसी . सूं काज सरं ११०।
 कथ कंवन - काया मोळ केम
 कागद माडण किम समय हुवै
 चर्पे - चर्पे विरतान्त मड्यो
 . अमरित - नीभर इतिहास नुवै १११।
 जळ आग लपालप भड़क उठी
 वा जोत भळकती पैली ही
 अस्टादस - सत सत्तावन . मे
 आजाद तरंगा फौली ही ११२।

चोखें मीकें नें कद चूकें
 मायङ्ग - हितु फरज निभावणिया
 वै हुळस - हुळस हुंकार करै
 पाडै विमुणां यस पावणिया ।१३।
 वै स्वतन्त्रता रा स्रोत खरा
 अवगाहण मुगत नाक राखें
 वस श्रेक शर में दिव्य वपु
 भङ्ग इसडों सांसो कथ भाखें ।१४।
 दट आजादी रें दीवानां
 आजाद हुवण रो नेम कियो
 भगलपांडेजी घोर महा
 भंडो तूकानी हान लियो ।१५।
 वां बटन दवायो तुरत वंठ
 लपटण पळटण रो लाल हुवो
 आत्याचार्यां प्रतिकार जता
 धीयो आजादी - वीज नुवो ।१६।
 फांसी रो सजा दइ दुस्टा
 मन वै डरता कद मतवाळा
 भोज कांटां - कस्टां सुखमानें
 वै आजादी रा रखवाळा ।१७।
 वां जोत जळाई इसी अलख
 लख आंखां खून उतर भावें
 वां रें उफाण रो श्रेक भलक
 कायरता - भाव परा जावें ।१८।
 वा आग लगी मेरठ में पट
 भट बीजापुर में जाय भरो
 गोरमपुर में निय रूप लखा
 भ्रू ताकत सगळी ज्वाळ भरी ।१९।

वा डलहौजी री चाल दीठ

भखणो अजगर हो भीमकाय

पच पसर-पसर कर खसर-पसर

धुम घणी मचाई चायमाय 1201

भड गटक-गटक घण भीमकाय

जद लाव -लाव री रटन लगी

लोभी - पापी रै किसो घरम

जग पूत अगम भट भडक जगी 1211

रच आस लपट्टां आसा री

चिणगारी नै विस्तार करी

सोचै विस्वास जगावण सूं

सगती सगती में अनुप भरी 1221

जद भांसीवाळी राणी रै

खोळ री बात नकार करो

खबरां पूगी रणवासां खट

क्रोधण सिंघणी हुंकार भरी 1231

है कृण जिळमियो भूमि पर

बहत पांणो नै रोक करै

है कृण जिळमियो धरती पर

नाहर थापड़ळ्यां ठोक चरै 1241

निश्चमन वीरां रै मन नै

पण फोर सर्क कुण वमुघा पर

कुण रो मां सूंठ इसी खावो

नाहर सामं ऊभै तोडर 1251

जिण री हुंकार मुणतां ही

कितरां रा प्राण पयाण करै

सामे देखें कुण उण जम रै

सामी छाती कुण जाय मरै 1261

धिन सतवन्ती लिछमी वाई
 नीं उळटी आग्या अपणाणी
 उथळो दीनो रणवासां सूं
 नी वात कदै भुखणी जाणी १२७।
 वे आंख्यां आग बरसणी वस
 तिम तेज अगारां ज्वाळ जळ
 लख भसम करन्ती लंकाळी
 भांसीराणी भळ भाळ भळ १२८।
 उण मरदानां नै मात कर्त्या
 धिन पुरस वेस अदभुत धार्या
 जद रास गही रण त्पारी की
 बांकडळां हरख - हरख वार्या १२९।
 भड तुरेवाळी तेज आम
 सच माण - मरण मरणो सीख्यो
 कैनिंगे डाकी जाळ - डाळ
 जाळी रस्तो भट पट खीच्यो १३०।
 निच कांटो फंथ्यो फांसण नै
 चख - मखां भखां आवत दीठी
 पण पारा हो बो खरो परं
 माखी समझी जिण ने मीठो १३१।
 रे ! छातो छेड टाटियां रो
 कुण मुख री नीद हराम करो
 दुरगा नै अबळा नार देख
 खळ भूल मोकळी करी खरी १३२।
 कुट नाकावंदी खूब करी
 पण मायड जोस उफाण हो
 दधि मीवां नै भकभोर तोड
 कुण तूफानी गति जाण हो ? १३३।

वा लै'र लै'रका लेण बड़े

कुण उण री थाहां तोल करै ?

रण ज्वाळ-ज्वाळ ज्वाळामुख री

विरतक होळी कुण बळै मरै ? 1३४।

सीयैदाऊ नै कुण नूतै

कुण ऊंघे मारग जाण पड़े

पण आंधो हुय मद राज-पाट

वो ऊंघा - सूंघा खूब घड़ै 1३५।

चामुण्डा रूप धर्या चण्डी

मतनाळी बा रण चण्डी ही

आग्या सुणने कैनिग पण री

बा कदै न ज्वाळा ठण्डी ही 1३६।

जिण महिसामुर नै पकड़ धर्यो

कर मरदन मही असुर मार्या

सट रगतबीज नै भेज सरग

बरसा - कारन्त असुर वार्या 1३७।

जिण चण्ड-मुण्ड भट चूर कर्या

ना करी देर इक पळ भर री

विण रै हाथां में सस्त्र वेख

बळिहारी गाऊं उण कर री 1३८।

अयि दोष हस्त या अस्तभुजी

अस्तादस चाओ वीसभुजी

माँकात्यायनि ! हद रूप धर्यां

वर निजर पड़न्ता टीस वुभी 1३९।

किम अंगरेजां री दुस्ट फौज

रण आय सामने ऊभ सकै

जिण मनां हवड़का कपटां रा

भुखणा माथा असि-भटक भुखे 1४०।

वै यग्य मांडियो धुर पवीत
 मां लाइलड़ां आ'वान कियो
 बळिवेदी भांसी थाप वळ
 साकळ लिछमीजो हात लियो १४१।
 वै होता हा उण यग्य विचै
 पण यजमानी रो रूप धर्यो
 आतम - तत नै लख बार बार
 स्वाहा-स्वाहा आ'वान कर्यो १४२।
 वो अदभुत यग्य वरंकारी
 साकळ जिण री जजमान बणी
 निप्र होम वपु कर स्वाहा धुन
 घर जोत प्रकासी घणी घणी १४३।
 रण में पूगी कर विजं करण
 अर रूप प्रचण्ड चण्ड करियो
 हातां में अति चमचम करणी
 भट सगळां जोस गजब धरियो १४४।
 तिम वेहूं हाथां तरवारां
 वारां पर बार करण लागी
 गडगडा'ट करतां धम्मगडा
 हुय तितर - वितर भागा बागी १४५।
 जद जोस सौगुणो भर जिव में
 वै पीछो कियो हकाळा दे
 पण घोखें सूं धिरगी पनगी
 विस फूकारी जीवां वे - वे १४६।
 पण हात दोय भल जोर कर्यो
 हज्जारां हाथां मात करो
 दुरभाग पीटणो आय मर्यो
 भूंडे नाळ हद घात भरी १४७।

घोटक नूँवो असवारी रो
 हो अकड़ - जकड़ तणणैवाळी
 तण अड लगाई ढील छोड़
 वळियो मग ऊफणतो बाळो १४८।
 वळग्यो अडग्यो तणग्यो वैरो
 मीचू रो दुस्ट बण्यो साथी .
 कितरो घोखो उण दियो नोच
 लानत इमडे साथी घाती १४९।
 बा आई वळगी बदवेळा
 अस्तंगत हुवो रवी दोस्यो .
 सख करां पसार्यां लाल-लाल
 जळ वीच बतासै जिम फीस्यो १५०।
 सौभाग घिऱ्यो हा! चहुं दिस सूँ
 राणी लिछमी मरदानी रो
 गा वहुँ भाग निय मायड रो
 रण - बिजै वण्यो घट हानी रो १५१।
 अन्तस वेळा में धूम माच
 खट - खटाक खड्गर्गा वार कर्षा
 सहसां वीरां नै सुला भोम
 मूगा - कावां तरवार भर्या १५२।
 इतरै में घोडो भोम पड्यो
 वा कूद पडो रण - ज्वाळ बरेच
 भळ ज्वाळमुखी री भूमभूम
 वा गई जोत नं सीच - सीच १५३।
 उण रै गिरतां माची वळवळ
 सूरज बाहिर जिम आभ सून
 दुस्टां पण अत्याचार कर्षा
 ऊवळतो हुयग्यो ठंड खून १५४।

पण लाभ - हाण जै-विजै नहीं
 वीरां रो दिस्तीकोण वणै
 रण फरज ऊतरै जामण रो
 तन तानां - बानां नेम तणै १५५।
 इण कुदरत रो है खेल इसो
 कुण मेट सकै उण अंकां ने
 नर फरज अदा करणं पावै
 तो घिन - घिन घण रणवंकां नै १५६।
 भारत भू पर हद करी
 अंगरेजा - घमरोल
 घरम - करम रै दखल मूं
 कूदण लागा होळ १५७।



धर्म री फेर जगाई जोत

७

लेखणी ! सम - फर न ल'र
आथम्यो पूरव दिस रो सेर
छायम्यो तमो तोम चहुँ - मेर
सूर - रवि कुण दीपला फेर ।१।
निरासावां रा छाया मेघ
गण न ढवग्यो कुहरो घेर
दूखणां अत्याचार्यां देख
कगं किण किसन - कन्हैया टेर ।२।
सुशीर्ज हाहाकारां चीख
चरचूँ विळखीर्ज विस्कार
विमुण - सम सासक खूब पपाण
दाव वंठा करणा दिस्कार ।३।
खुल्या कितरी द्रुपदां रा बाल
भळ पुँछम्यो कितरो सिन्दूर
हुई रीती कितरी मां - गोद
पापीया सासक अघ सूँ पूर ।४।
विळखती वं'नां खोया भ्रात
वांघसी राखी इव किण हात
धूरती दुःखां - देवि रो घात
सूकग्यो पींजर हाडां - गात ।५।

घोमणा पिच्छम दिस सूं आय

पावतां अस्वासण रो दूध
घरी विकटरिया सासण डोर

फेर ही रह्या धूत रा धूत १६।
करी सोसण री घण मनवार

लूटतां लख्या न दानव नीच
हेम - विहगी रा पंख मसोस
तळां विच रौंदी आख्यां मोच १७।

खुल्या आयात अनं निरयात

मची कानून मारफत लूट
खायग्या नोंच - नोंच चिकचोड

कर्या फळ - भरिया रुंखा ठूठ १८।
भणाई मंकाळे री नीत

गुलामी - चादर कर विस्तार
नोकरी करणी हुय इक भाव

संस्कृति रो करणी निस्तार १९।
मनां में दैसत बेठी मूक

नहीं बोले - चाले मजदूर
मसीनां रं पैयां पीचीज

दूबळा हुयग्या घण मजदूर १०।
मरण लागल छोटा उद्योग

छायगी वेकारी भरपूर
मसीनां सूं टक्कर किण भांत

न लेण सक्ता हुया चकचूर ११।
सोखळो अरयतंत्र हुय जाय

कठे कुण उण नें साम कूंत
विना नीवां रं टंणो भोण

सारथ्यां सोखळ कीनो सूंत १२।

घरम रं भावां नं नकभोर
 कर्यो संकृति मार्य परहार
 जागीया घरमवीर तज नींद
 पुनरजागण करीयो सुखसार ११३।
 भूलग्या जिण श्रातमतत नीव
 वतायो भाप भापरो रूप
 कर्यो नवजीवण रो मंचार
 दिखायो सपरो पंथ अनूप ११४।
 दयानन्द रिसी रं रासां हात
 सिखाई सत्य - जीत री बात
 वेद घर यज्ञ रूप समभाय
 हटाई काळ - अघरडी रान ११५।
 प्रगटिया परमहंस सतवीर
 पढ़ायो प्रेम - भाव रो पाठ
 राम घर किसन नांव इक घोर
 नरेन्दर अपनायो सच - वाट ११६।
 सीखिया सपरां भावां सीख
 उघड़गी आख्या फट चरणोट
 भावना जळमभोम हितकार
 भगावं कायरता बरणाट ११७।
 आग रो चिणगारी लघु रूप
 सुळगती वाळ मोटा ढेर
 घुखन्ती घोर - घोर घुख
 भडकता कितरी लाग देर ११८।
 समं है बाढ़ सरी रो जेम
 बहै सगळी सृस्टो उण बीव
 समं है बड़ो भोम तूफान
 करे वड़ डूंगर खेहा कीच ११९।

समं में चकरावै नर - नार
समं सूं टकरावै कुण जाय
समं नै नमस्कार सी बार
समं रो भेद न कोई पाय ॥२०॥
समं पर कोटी है बळिहार
समं सूं मोती निपजै नूर
समं नीं करै सीस बगसीस
चकर में आवै सो चकचूर ॥२१॥
समं रा गीत गाय बहु सूर
समं सूं फोड़ै कुण निय माथ ;
समं जद पळटै पळटो खाय
छोड़ दै तन रा गाभा साथ ॥२२॥
समं दै उखत कृत रो सीख
समं विण बुध बापड़ कहलाय
समं करदैं उळटै नै मूध
समं रै कृण लगावै लाय ॥२३॥
समं रो घुर नै जास कराय
बणावै विर अगद रो पैर
कळुपियो सामो जोवै कृण
लै'रणी हक आवै जळ लै'र ॥२४॥
समं रो गति नै पळट दिराय
मात रा रण - वांकड़ला वीर
घड़ै नव - इतिहासां रा प्रिस्ट
घर नै कपावै रण - घोर ॥२५॥



राष्ट्र-आन्दोलण रो दृढ़ नींव

८

अट्टारै सो सत्तावन रो
 साको वो किम भूल्यो जावै
 जिण ज्वार जाळ जामी जैड़ी
 चख - मगां उफण लाली छावै ११।
 विण विणगारी नै समझवुभी
 नीवींउ ह्या सोसणकारी
 पण मांय - मांय सुलगी प्रगटी
 धुत्र रूप विकट धारणधारी १२।
 अट्टारै सो तिरियासी में
 कलकत्तौ में पैला पारी
 इण्डीयन एसोसियेसण
 सम्मेलण करीयो सुखकारी १३।
 सुरेन्द्रनाथजी वैनरजी
 हा नमन जोग नर भांकड़ळा
 आजाद मात नै करण अड़
 खोलण वेड़लळ्यां रा कड़ळा १४।
 चौरासी रो चक्कर काटण
 जाण चौरासी सन आयो
 मदरास महाजन सभा थरप
 भर जोस जवानां मन छायो १५।

सगळा भाई हुय अकनिष्ठ

थाप्यो सुभ गठण अंक होयां
सगळां री लगन रंग लावै

अब काम सरै कींकर सोयां ।६।

जद भणियां - गुणियां रै नांवै

चिर पांनो चेतनताकारी

मुख ह्यूम सा'व री बात खरी

परकासी कांगरेस वारी ।७।

हुय सम्मेलण मुम्बा नगरी

इक जोस भय्यो आ'वान कर्यो

इक नई चेतना बात नई

नस नव प्रकास जिदगाण भय्यो ।८।

सगळां रै मन हो रोस - जोस

सहु अक लक्ष्य रो रूप हुयां

पण पाण इसी प्राणां पाणी

फूंकार्यो काळ - सरूप छुयां ।९।

सतवादीजी गोपाळकृष्ण

जद वागडोर थामी काठी

घर नरम भाव दृढ हिये बीच

कायरता कूच करी नाथी ।१०।

दक्खिण दिसि काळ पड्यो भारी

पूना में महारोग फल्यो

पण प्लेग भयंकर मू' निपटण

नीं अंगरेजां हिवडो संल्यो ।११।

जद प्रलैकाळ री वेला में

जनता रो घ्यान नहीं

पूना रै रंण्ड र

बीजे ने र

नाहर नै गड समभणवाळा

नीं रंगै सियारां नै जांण्या

सिद्धागतां - नियमां नेमां रा

कागद रं पैटां में टांण्या ११३।

वै मिन्नत अरज्यां रै बळ सूं

सासन सुधार जाणी माया

सामाजिक - माळी उळभावां

मुघ - भावां मुळजाणी चाया ११४।

नीं ध्यान धर्यो सामन कार्यां

घण दमण - चक्र नै तेज कर्यो

प्राकिरतक कोपां री वेळा

दुस्टां मत में नीं हेज धर्यो ११५।

नेता हा नरम भोळाण में

वां मानवता सूं तोल कर्यो

वां मीठी - चुाडो वातां में

नाहर कद गड रं बोल कर्यो ११६।

श्रट्ठारै सी सताणूं में

भूकम्प कंपाया हिवडां नै

पण उण पापार्णां काळजिद्यां

ना प्रलै कंपाया जिवडां नै ११७।

कर्जन री कूट चाल काळी

तूफान उठायो हद भारी

टुकडा करणे री मुरूग्रात

आदेस कर्यो घरवाचारी ११८।

बंगाल - विभाजण कूट चाल

कर फूट - फांट जमणो चायो

भाई - भाई नै भिडा - भिडा

पाप्यां करणो रो फळ पायो ११९।

बंगाल धन सहु देस बिचा
 गम्भीर लै'र लै'री गं'री
 पग्देमी स्वेच्छाचार्यां पण
 नी लखी कजा गळ में पं'री :२०।
 कद दीपसिखा कांपणवाळी
 वा वात - पात - भंभा सं'णी
 वाघावां कस्टां बीच बघै
 डगमगाट कर मारग वै'णो १२१।
 पण तीन केसरी प्रलयंकर
 भट बाल - लाल घर पाल हुया
 थामो उजळी प्रजळी वाती
 वीरां रै मन घमरोळ छुपा १२२।
 आंधी - बरखा री किम मजाल
 कुण बांध सके तूफानां नै
 जिण कफण वांघियो केसरिया
 घिन - घिन वांनडळै दानां नै १२३।
 ओ बीजो चरण क्रांतिकारी
 नी उदारवादी पनप सक्या
 जद उग्रवादी दीवानां
 कद भीख मांगणी राह तक्या .२४।
 बळवन्ता वर वै बांकडळा
 बकिम विस - जोर सवाया हा
 वै धाक करन्ता बैलानर
 नाकों घण चणा चवाया हा १२५।
 दां नाक राखियो वीरां रो
 दिन - रात कड़ी मै'नत करणं
 नी डर्या यातनावां सुं नर
 हेंम हांस गया जेलां भरणे १२६।

है जन्मसिद्ध अधिकार खरो
 सुणलो सुणलो सासनकारी
 भारत रो बच्चो बच्चो भड़
 है - स्वराज्य रो अधिकारी १२७।
 ओ सिघनाद कर घोरों में
 श्री तिलक तिलक अनुपम वणग्या
 पावण आजादी हर कीमत
 बस जोस गर्व सीना तणग्या १२८।
 काळो पांणी रो सजां नहीं
 वरवीर तिलक न डरपायो
 वै आत्मतत्त्व रा जाणकार
 सासन न भटकं जरकायो १२९।
 उत्तर -दक्खण - पूरव पच्छिम
 महु एक भाव में लीन हुवा
 पंजाव केसरी बीर पूज्य
 मायड़ मुख लख गमगीन हुवा १३०।
 बगाल नहीं पाछे रंणो
 हर कीमत मोल चुकावै हा
 भूपेन्द्रनाथ - घोरेन्द्र घोस
 अंग्रेजां खून मुखावै हा १३१।
 लेण - देण रं चक्कर में
 बस ध्यान राखज्यो अक वात
 पैला लेवो अरि प्राण पछे
 अरि माग मरै भिड़ हेक घात १३२।
 सूरत रो फूट सूळकरणी
 पण सोळ सन में भेळ छुयो
 विहुं दळां कणवारां रं बिब
 मायड़ रं हेतू भेळ हुयो १३३।

सन इग्यारं रो यात खरी
 वँग - मेळ हुयो हद मुखकारी
 अधिनेम राजद्रो' कर पारित
 ओ सन पण हुयग्यो दुखकारी १३४।
 सन तेरं में डाकी सूधा
 संसोधन कानूनां करियो
 अर राष्ट्रवाद रं भक्तां नं
 कुचळण रो भाव मनां भरियो १३५।
 सासन करनं नं भरो फूट
 अंगरेजां भूंडी चाल चली
 अर तीस सितम्बर छत्र सन में
 कर थापित लोग न करी भली १३६।
 ओ बीज बोड्यो ना चोखो
 वं भूडो रुद्र रूप करियो
 टुकड़ा हुवणं रा भारत रा
 भयकारी खून वर भरियो १३७।
 सन सतरं रं अधिवेशन में
 अय देव अकसो रूप धर्यो
 भज बाल - पाल अर लाल भडा
 हुंकार करन्ता जोस भर्यो १३८।
 दो हुया टूकड़ा गरम - नरम
 पूरण स्वराज्य री मांग करी
 इक नई दिसा अर, राग नयो
 भिवसा वृत्ति उच टांग घरी १३९।
 मिघ रं सामं मिन्नत करियां
 कद छोई वो साधू वणनं
 हिसक नं प्रतिफळ में हिंसा
 सठ रं सागं सठना भणनं १४०।

जद कानूनां रं वळवूत
 काळा कामून करण पाया
 उण रो उयळो ऊचन्तो ही
 घट पापां खूब भरण आया १४१६
 हे देर, नहीं अवेर उठे
 वळिदानी रंग जमावला
 जिण सीस अरपियो मायडने
 अरि उण रो घाह न पावला १४२०
 प्रतिक्रियावादी नीत्यां सू
 भकभोर दियो हिवडो पाप्यां
 जद पत्यर रं भांडार विचां
 ११ लख नरसंग रूप कडो कांप्यां १४२१
 वो रूप सुलपणो प्रलयंकर
 ताण्डवकारी अत जोस भर्यो
 खट खटाक करतो भणण भणण
 आजाद हुवण ने रोम कर्यो १४४१
 श्री विपिनचन्द्रजी नाद कर्यो
 हूं मोख मांगणी नीं चाळं
 दे दान अगर आजादी रो
 नी दान मांग लेण पाळं १४५१
 जद वेण कह्या इम लालाजी
 पंजाब - केसरी खरा - खरां
 विरतो-घिरणा इण भिवसा सू
 आजादो खातर मार मरां १४६१
 हे राज फिरंगी पमुता रो
 पमुता - वळ सू लडियो जावे
 कृण समभावे निध ठोठां ने
 भीतां सू वहास करी चावे १४७१

जद 'कानूनां' रै वळवूतें
काळा कामून करण पावत
उण रो उयळो ऊचन्तो ही
घट पापां खूब भरण आया १४१।
है देर, नहीं श्रंवेर उठै
वळिदानी रंग जमावैला
जिण सीस अरपियो मांयड नें
अरि उण रो थाह न पावैला १४२।
प्रतिक्रियावादी नीत्यां सूं
भकभोर दियो हिवडो पाप्यां
जद पत्यर रै भांडार बिचां
'लख नरसंग रूप कडो कांप्यां १४३।
वो रूप सुलपणो प्रलयंकर
ताण्डवकारी अत जोस भर्यो
खट खटाक करतो भ्रूणण भ्रूणण
आजाद हुवण नें रोस कर्यो १४४।
श्री विपिनचन्द्रजी नाद कर्यो
हूं भोव मांगणी नीं चाऊं
दै दान अगर आजादी रो
नी दान मांग लेण पाऊं १४५।
जद वैण कल्या इम लालाजी
पंजाव - केसरी खरा - खरां
विरती-घिरणा इण भिवसा सूं
आजादी खातर मार मरां १४६।
है राज फिरगी पमुता रो
पमुता - बळ सूं लडियो जावै
कृण समभावे निध ठोठां नें
भीतां सूं बहस करी चावै १४७।

सन इग्यारै री यात खरी
 वेंग - मेळ हुयो हद सुखकारी
 अघिनेम राजद्रो' कर पारित
 ओ सन पण हुयग्यो दुखकारी १३४।
 सन तेरें में डाकी सूघा
 संसोधन कानूनां करियो
 अर राष्ट्रवाद रें भक्तां नें
 कुचळण री भाव मनां भरियो १३५।
 सासन करनै नें भरो फूट
 अंगरेजां भूंडी चाल चली
 अर तीस सितम्बर छव सन में
 कर थापित लोग न करी भली १३६।
 ओ बीज बोइयो ना चोखो
 वें भूट्टो रुद्र रूप करियो
 टुकड़ा हुवणं रा भारत रा
 भयकारी खून वीर भरियो १३७।
 सन सतरें रें अघिवेसण में
 त्रय देव अकसो रूप धर्यो
 भज बाल - पाल अर लाल भड़ा
 हुंकार करन्ता जोस भर्यो १३८।
 दो हुया टुकड़ा गरम - नरम
 पूरण स्वराज्य री मांग करी
 इक नई दिसा अर, राग नयो
 भिक्सा वृत्ति उच टांग धरी १३९।
 सिध रें सामें मिन्मत करियां
 कद छोईं वो साधू बणनं
 हिसक नें प्रतिफल में हिसा
 सठ रें सागें सठता भणनै १४०।

जद कानूनां रें वळवूतै
काळा कामून करण पाषा
उण रो उयळो ऊचन्तो ही
घट पापां खूब भरण आया १४१।
है देर, नहीं अंधेर उठै
वळिदानी रंग जमावैला
जिण सीस अरपियो मायडु नें
अरि उण री थाह न पावैला १४२।
प्रतिकिरियावादी नीत्यां सूं
भरुभोर दियो हिवडो पाप्यां
जद पत्यर रें भांडार बिचां
' लख नरसंग रूप कडो कांप्यां १४३।
चो रूप सुलपणो प्रलयंकर
ताण्डवकारी अत जोस भर्यो
खट खटाक करतो भणण भणण
आजाद हुवण नें रोस कर्यो १४४।
श्री विपिनचन्द्रजी नाद कर्यो
हूं भोख मांगणी नीं चाऊं
दैं दान अगर आजादी रो
नी दान मांग लेणें पाऊं १४५।
जद वेंण कह्या इम लालाजी
पंजाव - केसरी खरा - खरां
विरती-घिरणा इण भिवसा सूं
आजादी खातर मार मरां १४६।
है राज फिरंगी पमुता रो
पमुता - वळ सूं लडियो जावें
कुण समझावें निध ठोठां नें
भीतां सूं बहस करी चावें १४७।

सावरकर - वन्धू वीर घणा
 नी डरणवाळा हा जम सूं
 करणी - कथणी में नीं अन्तर
 सट भिडणवाळा हा वम सूं १४८।
 कर सगती गठण आत्म निरभर
 सह कष्ट नही घवरावांला
 सह त्याग कर्यां सुख-धन-वैभव
 सपरी आजादी पावांला १४९।
 कर बहीसकार परदेस्यां रो
 सामान पारको नी वरदां
 नी करां नोकरी सासन रो
 नीं डरां मातृ - सेवा करतां १५०।
 पण नरम - उग्र दळ बेहूं ही
 भल हिवडूं अक नेम घरियो
 बेहूं अरपित हा मायड पै
 सगळां मन देस प्रम भरियो १५१।



मरणै जलियांवालो बाग

६

सहोदां रो सूघो इतिहास
 कहीजै कलम काठ री केम
 सुण्वां जिण नांव सुलपणो सूर
 सीचने रगत निभावे नेम ११।
 नीपजै समै बोइया नूर
 अड़ोकै कदै न लै'रां टेम
 समै पर बलिहारी हुय जाय
 मात री चावै कुसळां - खेम १२।
 आग री लपटां अर अंगार
 ताप सह उजळै अघको हेम
 हयोड़ां अर घण सूं धिर होय
 घड़ाघड़ भेने चोट्यां जेम १३।
 घूंकणो घूँ - घूँ घूँबाघार
 सिखावै पूण बहानै सीख
 सह्या दुःखां जस घवळ सवाय
 चिरै हिय कदै न काढ़ै चीख १४।
 रहै उण बाग चमन हर रोज
 गन्धर्व' मधरो गम गै'माय
 भेवर नित जसां प्रमारै भोम
 उणां नीं काळ कळुपियो खाय १५।

नहीं धिर माया - काया जगत
 वात आ धारी विस्वा वीस
 कफण केसरिया माथे सोय
 पिसुणियां खूब पछाड़ै पीस १६।
 हुवै नीं कदै किणी रा दास
 मनां रा मौजी सिंघ लंकाळ
 मस्त जीवण मस्तानो माण
 देखनं डरै उणां सूं काळ १७।
 उणां रै पावां लंगर - लाज
 'गुलामी' सबद उणां नै गाळ
 करे दगसीस सीस भल काज
 उमापति रै गळ सौवं माळ १८।
 कूड़ कानूनां रो जंजाळ
 माग नै रोक सकै किण भांत
 जोगिया जळमभोम रा जीव
 दिखारुं कायर जिम नीं दांत १९।
 सन उन्नीस गुणीस कुलखणो
 तिरीदस दिवस मास अपरेलः
 'रोलट एक्ट' विरोध जतावण
 भोड़ ऊमटी रेलम - पेल १०।
 सगळां रै मन रास मोकळो
 होम - हुतासण साथ लियां
 बांकां अगन पाग -मे -बांध्यां
 रुद्र रूप हुय नाच कियां ११।
 मनां में उण सहु भरग्यो रोस
 ऊफणै -बांळै तोडी सीब
 बांध केसरिया -मावड़ माथ
 रूप घर पांडव - अरजन - भींव १२।

'बाग जळियांवाळां' रो गाय
 लिखन्ता काळजियो हुय टूक
 काळिमा रो लख भूंडो रूप
 हियें में खूब उठावें हूक ११३।
 बूढा - बच्चा मरद - लुगायां
 भीड़ नदी रो बेंती घाई
 कुण नै ठा ही क्रूर काळ रो
 खाखी बरदयां चहुँ दिस छाई ११४।
 छूटा घोड़ा दनदन करता
 सुडताळां तरवारां तराई
 गोळां - गोळ्यां वीछारां रो
 खुसियां मायें मातम छाई ११५।
 ताळा लाग्या जद जुवान पर
 नीदां नै भट नीद दिराई
 आखें - देख्या हाल कथण कूं
 बजंजर ही निय हियो चिराई ११६।
 उडायर गी ऊंची आग्या
 गोळ्यां रो वीछार कराई
 च्याहें मेर घेर जनता नै
 रगत - पूरणी नीव भराई ११७।
 कितरी चिल्लाहट हा ! सुणने
 जळियांवाळो बाग विलखियो
 ऊजड हुययो भीड़ - भाड़ रो
 जुलस मसाणां चमक चिळकियो ११८।
 बळ्यां भाड़दी कितरी पाप्यां
 नी देख्यो मधुमास बिचारां
 कगण सूं पैला ही उणें नै
 चुण - चुण नीवां भरी चिजारां ११९।

सौरभ फैलण सूं पैलां हो
 मसळ - मसळ भू माथ गिराई
 नहीं देखियो जीवण - जोवन
 लण नै दुस्टां कजा दिराई १२०।
 सतवन्ती बँनां रै सिर सूं
 कितरी वमुघा पाट कराई
 लोटपोट कितरो मातावां
 खाई खाली लून भराई १२१।
 बूढ़ा जरजर जळमभोम पर
 प्राण अरप निय फरज निभायो
 भुर्यांवाळ चैरां उजळ्यो
 मरहुम जिवड़ां जोव जियायो १२२।
 भल सिन्दूरा री ठीड़ भरण
 नव दुरगावां में जोस भरयो
 निय तन सिरि गोळो - बीछारा
 हँस - हाँस ऊजळो रगत मर्यो १२३।
 चीख वं काळजिये नै चीर
 घाव करभ्या जनता भरपूर
 खोलभ्या हिवड़े नै भरुभोर
 करी मानवता चकनाचूर १२४।
 मारदी विहगो पाँख मरोड़
 देखता रैग्या सगळा घूर
 बाज जिम अक भपट्टो वोड़
 बिळखतां वचिया बिळख्या भूर १२५।
 निसाणां अणगिण मार्या नीच
 जिणां पापाण छेरुळा कोन
 घणा हो घोड़ां रो घमरोळ
 ताक पर मेल्यो निय रो दीन १२६।

किया घण बेहद-अत्याचार
 धार ; जातूधानी सामाव
 मात कर असुरां री करतूत
 हुया दुस्टां रै मन हड़काव १२७।
 भूलग्या सगळा सूघ विचार
 छोड़नें मानवता री रीत
 मसीनां घड़घड़ गोळ्यां मार
 नही उण पाप्या मानो चीत १२८।
 देय घेरो फौजी दीवार
 मसळदी मानवता मक्कार
 अरे ! बां राक्षस - असुरा - डार
 फिटफिट काळुपियां धिक्कार १२९।
 वसन्ती बळती हुयगी वाय
 घघकती आंधी अर तूफान
 मं'कती मीजर तरु सहकार
 दं'कती अनल मांडियो गान १३०।
 सहीदां पत्रभड़ सामें देख
 पड्या भूकरणं घण प्रतिकार
 सोयनें फूला जिम मुख सैज
 जगाई जोतां कर फुत्कार १३१।
 हुगो घड़घड़ाट रो सुर तेज
 फाटिया खवणपुटा रा पाट
 बही धारा सोणित री अम
 पाटिया विहूँ सरिता रा घाट १३२।
 कोकिला वीसरगी कळ - कूक
 कण्ठ बूठीज्या कंबळी गार
 भँवर री मधरी - सी हिय कूक
 भरम में काटीजी - भ्रू धार १३३।

रंग उड़ग्यो फीकें मधुमास
 पीत रंग हुयग्यो चटपट लाल
 जावतें पतभङ्ग पत्ता भाङ्ग
 हूँठ रूँखा री वाळी खाल ॥३४॥
 जगाई होळी री भळ भाळ
 उठन्ती लपटां भरियो जोस
 जळाई मनडा इसडी चाल
 गढन्तो बळिपथिकां रो कोस ॥३५॥
 उड़ायर री पापी करतूत
 कराई घड़ाघाड़ सड़ताड़
 हुकम दे हुकमत भरिये भूत
 मचाई बड़बड़ाट घड़घाड़ ॥३६॥
 निसाणां जाण सिकारां मार
 दनादन गोळ्यां री घमरोळ
 मिनख पर इम अमुरी व्यवहार
 खनाखन करता सायर टोळ ॥३७॥
 सोयग्या सान्त भाव सूं सूर
 ठठाका मार ठगां कर ठीक
 नीपज्या मायढ़ पूत सपूत
 टीकग्या राज फिरगी टीक ॥३८॥
 हूया हक्कावक्का नर - नार
 सोच नीं सक्या दुष्टनी चाल
 लखी च्यारूं नांनी घड़घाड़
 खीचसी जाण जीवित खाल ॥३९॥
 वे'या रतनाळा खाळ - प्रवाळ
 हुयो कीचड़ हा बो जळियान
 निहृध्या लोगां री ले जान
 नहीं जू रेंगी हुकमत कान ॥४०॥

सहीदां रो रत भरणी जाम
 देस में उमट्यो इम तूकान
 सुळगती चिनगार्यां रो फोस
 गाइयो वीरां सीधू - गान १४११
 बळियाथिकावां रो बळिदान
 हमेसा मुणियो फळयुत होत
 फूटसी पापां मूं घट पूर
 करै चाश्रे सगळा भिल कोत १४२१
 सहस्रों हाथ सहस्रयुन सेन
 सामनें ऊभो डायण जेम
 बाधनें पिजड़े में लकाळ
 चलै बस कितरो कितरो किम १४३१
 देयनें सस्य वोर रं साथ
 देखता उण भीमां रो जोर
 निहृथ्या भर बघिया वं हाथ
 कियो असुरां अघ भिलनें घोर १४४१
 रूप हिंसा रो इसो कुरूप
 कलम मूं केम वखाण्यो जाम
 गोर - रंग रग - रग काळो रूप
 कोपलो काळो हिवडो काय १४५१
 याद जद काळो घटना आय
 करै भंकृत विद्युत सहु काय
 ब्रोध तन व्याप डील नै खाय
 जोस मस - नस में छावै छाप १४६१
 दिवस ओ कींकर भूल्यो जाय
 उवाळै ठंडै पडियै खून
 याद कर जळियांवाळो वाग
 खून नस - नस उफणे रत - दून १४७१

नमन उण जाण अनं अणजाण
 सहीदां मायड - भू रा साल
 रहिर रो कतरो - कतरो अण
 निभासी उण भगतां री चाल १४५।
 वीर रो भन्प - भन्प बळिदान
 घात रो करं सवायो नूर
 नमन बां सूरं नै सी वार
 सदा दे संवळ सदवुघ सूर १४६।



जोस जद हुयग्यो उजली आग

१०

आमादी रो इतिहास अछे
मणि अक्रेक अक्रेक सूं दीपंकर
आ माळा माळ इसो ओपं
अर विजंमाळ है जीतंकर ।१।
कथ घोर सहीदां रो का'षी
घण उथळ - पुथळ रो परवानो
जिणतें संजीयो खूब सवै
ओ कनक - रगत रो शुभ पामो ।२।
सन उन्नीसं रो कळळ - भळळ
दिवड़ां में हूक उठावै ही
काळजियै रा कर टूक - टूक
आसा पण घोर बढावै ही ।३।
पण बीस आयग्यो सन डाकी
खाया उगारवादी खारा
ओ बालतिलकजी ऊजाळा
हुयगा वै नंणां रा तारा ।४।
बां सूरज सूर सिवा सम बण
उथळा करग्या वै सागीड़ा
किम सूरज - जोती होइ करै
बंधण तोड्या जिण बाधीड़ा ।५।

वां राह दिखाई सगती रो
 सगती विण मिव री पूछ हटे
 सगती विण रीतो सब सिव है
 सगती है तो कट - काट बटे १६।
 सगती रो पूछ हुवं सगळो
 सगती विण नर नो मोल कठे
 सगती जीवण रो नांव अवर
 सगती विण सामे बोल नटे १७।
 सगती रें आगं जगती सहु
 हाफे सरणां भट हुय जावं
 सगतीसाळी रें चरणां सट
 लिछमी ही घणी रेंण चावं १८।
 सगती भालां - तरवारां री
 सगती बन्दूकां री भारी
 गोळां - बाहुदां सगती घण
 सगती री मै'मा हद सारी १९।
 सगती भासण अर बोलण में
 सगती जगती रो सार - तत्त्व
 सगती री लीला कण - कण में
 सगती नोसरिया जाय सत्त्व ११०।
 सगती सूं कुण मावो फोडें
 सगती आदर करवाणी है
 सगती सूं वैर नही करणो
 आ ही दानां री वाणी हैं १११।
 सगती आराणां में सोत्रे
 सगती री लीला है न्यारी
 वा रण - चण्डी प्रलयकारी
 उण नै है मारकाट प्यारी ११२।

पण भारत रो आजादी - पथ
 सगती रो दीठो रूप जवर
 बुध - महावीर रो सगती रो
 वो रूप अहिंसा हुयो वजर ११३।
 चमारुं कानो परजण गं'रो
 ही कड़कड़ाट पाळो फंकी
 आंनं में चपला चकाचौब
 खिलखिलाट करणो ही गं'ली ११४।
 भारत में तानासाही ही
 बोली पर ताळा लाग्या हा
 आरन विण भांभी रो तरणी
 खोजी तूफाना बाग्ग्या हा ११५।
 कुण थाम्भेला पतवार कड़ी
 डगमगाट करती नंया रो
 वा डगूं - डगूं मझघार पड़ी
 गमगमाट करती भंया रो ११६।
 भांसूडा पूछंआ इव कुण
 कुण घेइलत्यां नै काट करे ?
 सपरो आजादी रे खानर
 कांटां में सूघी वाट करे ११७।
 कुण साहो - सींगा नै बांधे
 कुण म्याऊ रे मुख जाबंवा
 कुण जिन्दगाणी रो मोह तज्यां
 भौतिक सुख तजणै पावैला ११८।
 कुण बांध बूघरा : पांषा में
 भोषा बण जैर उतारैला
 कुण बणे गोड़ियो काळवेळ
 सगळां रा कारन सारैळा ११९।

उण काळ हिमांसू री उभळी
 च्याहं दिस परगासी जोती
 वा मनमोहन री मोहक छिन्न
 च्याहं उण पै हीरा - मोती १२०।
 गांधीजी घारी वागडोर
 चहुं श्रीर निरासावां गं'री
 ही तमी निसा वादल छार्ई
 काटां री वां माळा पै'री १२१।
 गांधीजी थाम्मी डोर हाथ
 कवळा हाथां नै कर कठोर
 वॅरिस्ट्री छोडो देस - काज
 सोई सगती नै कर बटोर १२२।
 भण वॅरिस्ट्री वीलायत सूं
 वें खुसी - खुमी भारत आया
 अट्टारं सो ईकाणू में
 वें लै'र लै'रका मन लाया १२३।
 तद दाय वरस रं अन्तर मे
 सन तैराणू नूतो लाया
 अह अफ्रीका में अक वरस
 करणा मं'नत उत्सा'द्यायो १२४।
 पर उठें पैरवी बीजी हो
 वो रूप कुलखणो सामे हो
 गोरं सासन री दमन - चक्र
 जाणं ऊभो आराणं हो १२५।
 भारतवास्यां नै काळा गिण
 अणगिणत जुलम जुल्मी करिया
 गांधीजी घार्यो सस्त्र नही
 सत्याग्रं सूं कारज सरिया १२६।

बा बीस वरस री अरवधी ही
 अफरीका में लाम्बी छाई
 जद हिंसा छोड़ अहिंसा रें बळ
 'निश्चय सूं प्रगति पथ जाई १२७।
 विन वैराग त्याग ना टिकणो
 साध्य जिसो ही साधन सोवें
 गांधी जी रो अमर सत्य गुर
 भूठें मुख कुण जीवण खोवें १२८।
 चवदें सन में अफरीका सज
 कीरत फैली भारत आयी
 जुद्ध लड़ण नें अजादी रो
 पूत प्रथम वा सिक्सा पायी १२९।
 पनरें सन में अत दुखदायी
 मोचु गोखलेंजी जद पाई
 काळ - कळुपिये री करतूतां
 हिवडें नें टुक - टुक कराई १३०।
 बीजा नेता फिरोज'साजी
 सरग सिघाया पनरें सन में
 पाई व्हें दिव्य अमरता
 उण री मूरत गदरें मन में १३१।
 अफरीका रें बाद मा'तमा : :
 चम्पारण - आरण जीतियो
 दुखी दसा कृसकां भायां री
 तिनकठियो कानून बीतियो १३२।
 अस्त हुयो निलहां रो सासन
 रेंयत निय री ताकत जाणो
 वहम दूर हुयग्यो ओ बां रो
 सफल हुई गांधी री वाणी १३३।

फेर द्वंध सासन-करणे रो
 मौटफोर्ड कानून गाजियो
 रोलट एक्ट रोम भर दीनो
 न्याव - भाव तत्काल भाजियो १३४।
 पंडित मोतीलाल गाजिया
 तीनू वातां बन्दी हुयगो
 वकील-अपील-दलीलां - रस्तो
 बन्द हुयां न्यायालै सुयगी- १३५।
 जळियांवाळां बाग कांड वै
 मानवता मै काळी पोती
 हिये माचग्यो सगळां कळभळ
 दानवता वा प्रगटो कोतो १३६।
 चेंटरजी वंकिमचन्दरजी
 खोल्या जिण भावां रा बारा
 गीत पून पावन रच जग में
 आदर करे सीस भुक सारा १३७।
 'बन्दे मातरम्' गीत सुलपणो
 जिण अनुपम अकित भाव-भर्या! है -
 आजादी री बळिवेदी पर
 स्वाहा - स्वाहा वेंण भ्र्या है १३८।
 आ तान तरग्यां सूं उमटी
 मूरदां मै संचरें रस फुहार
 लख अपित पुत्रां रो जीवन
 स्वोकार करं गां सुत - जुहार १३९।
 इण आजादी री जोतां में
 गुरुदेव जोत जगमग करणी
 साहित्य - सृजण रे भावा में
 जिण प्रेम भर्यो पायड़ घरणी १४०।

वां जळियांवाळो कांड मुमर
 'नाइट' आभूषण त्याग कर्यो
 विद्रोह मच्चो मन सान्ति रं
 चन्दन रं रुखां आग भर्यो १४१।
 वां बंग - भंग आन्दोलण में
 सगळां साग सट भाग लियो
 कजन री मूंडी चालां नै
 उथळो देवणियो नाग हियो १४२।
 तिलक महोदय रं प्रयाण सूं
 अणपूरित गति सामै आई
 छोड़ गया विळबिळात करता
 नहीं दया वै कजा दिखाई १४३।
 गांधीजी रं दृढ़ कांघां पर
 आयो सारो चोभो भारी
 तंडे पण सकटां पार करे
 हिम्मत रो किम्मत है सारी १४४।
 बीस दिवस सन बीस बरस रो
 कर बहिस्कार परदेशी रो
 अण - सहयोग रो संखनाद
 हो भगडो देम - विदेशी रो १४५।
 जय बोल सह हिन्दू - मुसलिम
 नेरुजी भाखी आ वाणी
 हो कारण साफ खिलाफत रो
 अंग्रेजेजां नी इसड़ी जाणी १४६।
 बल राजकुमार फिरंगी रा
 कर बहिस्कार पूरो विध सूं
 सन इविकस में भारत आया
 दीख्या लच्छण इकरंगी सूं १४७।

हो जोर सोर रो ग्रान्दोलण
 सान्ति सूं चाल रह्यो नीको
 पण पांच फरवरी बाइस
 चौरा - चोरो लागो टीको १४८।
 इक्कीस सिपाही हुया भस्म
 इक घाणैदार हुयो स्वाहा
 गांधीजी रो हिवडो कांप्यो
 हद च्यांरुं मेर हुयो हा - हा १४९।
 जद सात दिनां रै बाद जबर
 बारै फरवरी नै रोक करी
 ग्रान्दोलण हुयग्यो ठण्ड - टीप
 पण खूब खिलाफत लोक भरी १५०।
 सरकार अपडिया गांधी नै
 वो चार मार्च रो वाको हो
 अर सजा दिराई छव - वरसी
 वो वज्जर रो वर साको हो १५१।
 पण स्वार्थ बिगड़तो देखपरो
 दो वरस बाद छोड्या पाछा
 ग्रान्दोलण हुयग्यो खतम और
 हिन्दू - मुसलिम भोड्या माचा १५२।
 सट जिलमी हिन्दू - महासभा
 भळ आजादो नै पावण नै
 ही अक दीठ उण समै सदा
 खळ - खळां दूपणां खावण नै १५३।
 सी अर दास विठ्ठल भाई
 श्री मोतीलाल अक हुयग्या
 डट नीव स्वराज्य पारटी रो
 उन्निस सी तेइस सन छुयग्या १५४।

इक धार गंग री घुर पवीत
 निसरी घवळागिर सूं गैरी
 भारत रो रूप मुलपणी हो
 अम्रित अजस्र धारा लैरी १५५।
 नेतावां रै हिय हर निपजो
 आजाद मात करणै खातर
 वस वळिवेदो री साकळ वण
 दड निस्चै निव भरणै मातर १५६।
 पट हियै हिमाळ उथळ - पुथळ
 माँची साँची मायड भगती
 गौरव भारत रो सुमर - सुमर
 जग आग जगा जायड सकती १५७।
 आजाद हुवै भारत जननी
 ऊजळ गौरव घण ऊजाळ
 जामण रा सगळा जायन्दा
 सहुभाव - वळुपियां नै वाळ १५८।
 काठी वेड्यां काटण खातर
 वीरत्व रूप सामे आयो
 इण जेत ऊजळी परगासण
 ध्वज मुक्त गगन में लैरायो १५९।
 वस अक लगन ही रात - दिवस
 रंवे अखण्ड भारत म्हारो
 भाई - भाई रो भाव भरां
 नां वाघां पापां सिर भारो १६०।
 जिण अक भोम पर जिळम लियो
 इण माटी - भावां बोरीज्यां
 इण मे पाळित - पोपित हुयनें
 अब कठ न जावां टोरीज्यां १६१।

जय संसनाद री तेज चमक
आन्तरिक नेह रो मन चार्या
भारत रै'सी नित सण्ड-रहित
साकळ प्राणां री वर चार्यां ।६२।
वै वज्र चण्यां हा चांकडळा
फोलादी वपु चमचम करतां
वै फुन्तां अर तरवारां नै
भल रूप अहिंसा सूं भरता ।६३।
सन उन्निस सौ अठ्ठाइस में
साईमन घणो विरोध हुयो
'साईमन पूठा चढ जाघो'
चट जनता रै मन क्रोध चुयो ।६४।
लाठी रा वार घडाघड़ सह
लालाजी सुरग सिधायी हा
गोविन्दवल्लभजी ने'रुजी
लाठ्यां अर डंडा लाया हा ।६५।
सहू देस माचगी हूंक कळळ
हड़ताळा जोर माचिया हा
लालाजी भारक अफसरिये
भड़ताळां सोर ताचिया हा ।६६।
हिन्दू - मुस्लिम इक पौधं रा
वै सुमन सुलपणा थाती हा
दोनां रो रगत रंग लायो
भाई - भाई बिहुं साथी हा ।६७।
इक खून खीळणो दोनां में
भारत री आजादी खातर
बेहू रो भारत माता है
चळिये रा अं सपरा पातर ।६८।

है हाड - मांस भर रगत श्रेक।

शंकी 'पोयो पड़िया. योषा

श्रेकी जाग्यां फूल्यां - फळिया'

शंकी घरती रा श्रे' पोया 1६६।

सन सत्ताइस में हाय ! भणूं

किम विस्मिल वीर कहाणी नूं

श्रमफाक-लाहिडी - रोसन नम'

'भड़ श्रांश्यां नोर बहाणी सूं 1७०।

मायड़ रा लाल सपूत खरा

फासी रै तख्त वै भूल्या-

जिण फूलां रै सीसां गूंधी।

'माळा श्ररपित कर सै फूल्या' 1७१।

किम त्याग सहोदर रो भूलां

वै श्रांखडल्यां रा तारा है

'आजाद' - 'गुरू' वै भूलां किम

वं निरमल गगा - धारा है 1७२।

वं जांत प्रकाश्यो जोस इसो

टक्कर सासन सूं लेण रो

वं जगमग करती जांतां सूं

हो- डसणो जाणें पणै रो 1७३।

जद क्रान्तिकारियां जोस-वड्यो-

व भाग जगळता सोला हा-

वं ठोस ठोस बस ठोस वीर

खुद बण्या बम्ब रा गोळा हा 1७४।

वां करण धमाको चाह करी-

दो वीर सामने आया हा-

पंजाब केसरी भगतसींव-

बटुकेस्वर सिघणी जाया हा 1७५।

वैं वीर असैम्बली भौन - पूंच
 भट इंकलाव रो गाज करी
 दो बम्ब फैंकिया दणदणाट
 सगळां री सुघ-बुघ नाज मरी १७६।
 खल्लबळाट माच्यो भौन बीज
 सगळां रा देव कूंच करिया
 पण वीर हुया धिर जांगां पर
 मरणा मौकें किण सूं डरिया १७७।
 कद वीर डरै कस्टां - कुन्तां
 बें कस्ट - कण्टकां सुमन भरै
 भट भटक चक्रमो' माया रा
 उण सूं मायड रा काज सरै १७८।
 नीं भुखणा कदै कूड आगें
 दड पथ सूं नीं डिगणैवाळा
 कर अेक वार निहचें मारग
 नीं कदम पाछ घरणैवाळा १७९।
 जद न्यायाल' में केस गयो
 साजिस रो जाळ जुलमकारी
 सरकारी पक्स गवा' भूठा
 फांसी रो रगडो कर भारी १८०।
 हो जुलम नही बां रो कोई
 बस आजादी रो माग करी
 मानव पर मानव रो बन्धन
 सोसण काटण री डांग घरी १८१।
 माता नै दुखी देख मनडो
 वैंटे रो नही सान्त रैंवें
 तन - मन रो मो'छोड जल्दी
 घमन्यां में तपत रहिर बेंवें १८२।

नाहर सम हिन्द केसरी ने
 जद बीच कूटघरें ऊभायो
 तणग्या आंखइल्यां रा डोळा
 सासन ने भटकें सुगायो ॥२३॥
 जद मुलजम यण्या भगतसिधजो
 हुय निडर सामने आया हा
 मायइ रो माण करणखातर
 वें सांचा सिधणी जाया हा ॥२४॥
 धिद अभिभासक सरकारी जद
 चोगाघारी सामे आयो
 जद जुरम बतायो मुलजम रो
 कमरे में सम्नाटो छायो ॥२५॥
 कस देसद्रोह रो बात कही
 पूरी गाथा कौणी चाही
 झूठो दळियो कथण चीव्यो
 वा मिसल बणो पोथी साही ॥२६॥
 वस देसद्रोह रो बात मुणो
 व सिध करी हुकार कड़ी
 कर अट्टहाम हेंस - हेंस जोरो
 जाणें ही उण ने खुसी वड़ी ॥२७॥
 वें लगा ठहाका जोरा सूं
 ठट्टा जाणं करणी ठाणी
 कुण रो हिम्मत ही रोक सकें
 भट्टा हा दुरगम चट्टाणी ॥२८॥
 अर अरज करी स्यायालेंने
 सरकारी दुस्ट पकसघारी
 ऊवें स्वर सूं निय वात कही
 दानवता रूपी नवकारी ॥२९॥

फूहड़ री भाँत हँसी - हँस नै
 मपमान करे न्यायालै'रो
 मच माणहाण कर कोरट री
 अपराधी दरज - भाले रो १६०।
 हँ अरज करूँ इण कारण सूँ
 ओ मुलजम खतरनाक भारी
 इण देसद्रोह रै अभियोगी
 तोड़ी मरजादा - हद सारी १६१।
 पण फेर हँसी सूँ रोबीलै
 ऊतर दीनो इचरजकारी
 हँसतै - हँसतै ही दे उथळो
 जाणै कीनी फट बमबारी १६२।
 हँ हँसूँ हँसूँला हर वेळा
 हँ जीवन भर हँसतो रै'सूँ
 हूँ फाँसी चढ़नां भी हँससूँ
 थूँ सजा दिरासी जद कैमूँ १६३।
 तद किसी अदालत आवँला
 फरियाद करैला किण विघ सूँ
 हूँ चूँमूला जद फन्दे नै
 हूँ हँसी हँसूँला इण विघ सूँ १६४।
 हूँ लाड़कुँवर हूँ जायड़ रो
 मायड़ रो फरज उताहँला
 थां रै इण कूड़-कपट आगै
 नी अपणो सीस भुखाऊँना १६५।
 सुण अमर वंण मस्ताने रा
 सगळां री बुध चकराई हो
 हवका - वक्का सक्का हुयग्या
 सासन री घिड़ मकराई ही १६६।

वो मूट्टहास कर फेर हँस्यो
 तांडव - नर्तक ज्यों गर्वमार
 जाणै हो आग लपरको वो
 मद भार फिरंगी सर्वमार १६७।
 आखर रच डोंग मूरुदम रो
 वां नै फांसी पर लटकाया
 यट्टकेश्वर पाछै उम्ररुंद
 गुरुदत्तजी ऊार अटकाया १६८।
 हो मिट्टी हद वा फौलादी
 चापेकर - वन्धू बण्णा वजर
 फांसी रै फरै हेत करयो
 सगळां भायां री अँहनजर १६९।
 श्री वामुदेव चापेकरजी
 फांसी - तहतें द्विग जावं हा
 अलवेलो चाल खुसी भारी
 जाणै जीवन - सत पावं हा १७०।
 वां जल काटतां भाई नै
 अलविदा करी खडा सागं
 अर काळमोटड़ी धुन उमटी
 जाण गुड्डी चढ़गी थागं १७१।
 ही बालकृष्ण जी री गर्जन
 हौं ठाठ - बाट सूं गमन करो
 हूँ ही दो दिन में आऊंवा
 भारतमाता नै नमन करो १७२।
 गूँजी आ कारा में गर्जन
 पाछै हो संखनाद पावन
 रण बीजमंत्र आजादी री
 या गीता री सपरो गावन १७३।

श्री वासुदेवजी री सा'दत
ऊजळ जस सागै संग कर्यो
चापेकर - कुळ री दमक - चमक
भल वळिवेदी पर रंग भर्यो ११०४।



पढ़ोजे इतिहासां रा प्रिस्ट
 रगत री स्याहो देवं साख
 सहीदां रो सपरो सहकार
 रखण ऊंचो भारत रो पाग ।१।
 जिणां री सा'दत जब्बर - जंग
 सुखायो श्रेंगरेजां रो खून
 भांक वा खे - खें करणी भूँव
 बाजती बाळै पानां - पून ।२।
 नमूँ उण वज्जर रोड़ां - नींव
 घणी सह धुमरां री घमरोळ
 होम निय तन -मन सगळो सींच
 कुदाया पाप्यां रा घण होळ ।३।
 सदा ही सगळो बातां सूघ
 नहीं हा. अन्यावां रें माग
 खरी - सच सिन्धु रागणी कूंत
 जगाया सूता नाहर जाग ।४।
 जुद्ध में जूभारां भट जूँभ
 भटकिया भटकीं सुँ जंजाळ
 तोड़नें ताळा तोमतडाक
 जळाई जोत जाळनें जाळ ।५।

सहीदां रो माळा सोकार
 श्रेक सूं श्रेक चमकणो नूर
 सीस रो सीदो करणा सूर
 गूँज गूँजित कर गणां पूर ।६।
 इमा जूभांरां रा सिरमौर
 हुया श्री म्द्वानन्द मा'राज
 जगाई ज्वाळां पळपळ जोत
 लपरको लगा फिरगी राज ।७।
 करा मानवता रो प्रतिबोध
 तोडने असत रुढियां बन्ध
 मार अग्यान - अविद्या - माल
 जोडने सत्य - न्याव मंन्ध ।८।
 पिता रो नानकवन्द जी नांव
 रैवना जालंधर रै पास
 लागतें फागण मइने लाल
 जिलमिया तेरस मितो खास ।९।
 गाइजे तळवन सांचो गांव
 हुयो वो इण नामे विख्यात
 जिलम रो गण बिहु चंद गुणीम
 बृहस्पती मुंमोराम : ख्यात ।१०।
 गिरीजी दयानन्द रो सीख
 पळटियो उण रो जीवन - भाग
 हिये में सद्धा सुमन ह्साय
 सूध हुय फूँफाड्योडो नाग ।११।
 असत रा पड़दा आपें - आप
 ऊगड्या सत्य सामनें भांख
 न्याव रें खातर कर फूँफाड
 निरासावां ने पूं ऊं नांख ।१२।

स्वास्थ्य घर सत रो राख्यो ध्यान —

लीन हुय सांचे पथ स्वाध्याय.

चेतने लोगां नै कर चेत

सरू कर करडो भल अध्याय ११३।

भणाई पतनी नै भरपूर.

उडाय भटक अन्धविश्वास

तोड़ने तमोतोम आकास.

खुलाई कन्यासाला. खास ११४।

जिणां री लगन लगायो जाप

धरपियो गुरुकुल आस्रम लाग

वागडो में कर कुम्ठां - खम

सीख संस्कृति - सिक्सा वेदाग ११५।

सम्यता - संस्कृति रो गुंजार

हिन्द री हिन्दुस्तानी रीत

भणाई अंगरेजी बेकार

करो भारत विद्या सूं प्रीत ११६।

मा'त्मा बग्या मुंसीराम

छोड़ने वकालात तत्काल

हवन में अर्पित जोवण होम

धनो - धन जळम भोम रा लाल ११७।

मा'त्मा हा बै सांचे राग

लोभमो' माया परे भगाय

दीप्त हुय दीपसिखा री दीठ

अमर हुयग्या भल आग लगाय ११८।

नजर डोढी रेंतो हररोज

फिरंगी सासन चाल - कु चाल

राख आस्रम सूं करडो रोस

बम्ब रा 'वरकसांप' गिण ढाल ११९।

'क्रान्तिकारी ग्राम्य रा लोग'
कियो इण बात मनां में घात
निखी 'वैलंटाइन' आ वात
नहीं पण लागी डोरी हात 1201

'क्रान्ती रो है ग्राम्य सीव
लिनी आ बात चिरोले प्राप
भरम भेटण खातर सरकार
खुदाई कर आंगण नै साफ 1211

कराई दो - दो गज तक जांच
'रैमसे' - 'मेस्टन' नजरां बीच
नहीं लागी जद हातां रै'स्य
लोभ रा फंदा फेंक्या नीच 1221

राष्ट्र रो खूब निखारयो रूप
छत्री रै लागण दियो न दाग
बाप - मां अर सच्चा आचार्य
गिणीज्या स्रद्धा सूं वेदाग 1231

असल में गुहकुल रै उद्यान
सीचनें रगतां - समजळ नूर
लगाई अमरलता लथ - लूब

गूँजन कर सगळा अम दूर 1241
मास आयो आखर अपरेल
ताल सूं इग्यारै तारीख

लियो गुरू मुंसीजी सन्यास
पाड़नें सतरें सन में लोक 1251
दुयो सद्धानन्द - रूप स्वरूप

वृहस्पती मुंसीजी साकार
करयो स्रद्धा सूं लोष्ठ करार
जंगत में कदै न मानो हार 1261

हा सैनिक खासा आधलाख
 सगळा मारकिया तईताज
 डाकी वणियोडा सत्ता सूं
 आवै ही वां नै नहीं लाज ॥३४॥
 जद आजादी रा दीवाना
 आगे बघता ही जावै हा
 उण मक्कारां री बुध - वापड़
 माया भूवाळी खावै हा ॥३५॥
 फट भीड़ चोरने फूंकड्या
 श्री स्वामीजी सामे आया
 गोळी चालण सूं पैलां डट
 नीडर बोल्या सिधणी जाया ॥३६॥
 जनता पर गोळी मत दागो
 पैलां म्हारो सीनो दागो
 रे दुस्टां ! खडो सामने हूं
 बोडो श्री रंगभीनो तागो ॥३७॥
 तनु छव फुट रो लांबो तगडो
 वपु फौळादी कंचन वरगो
 वो ठोस ठोस हो दीप्त तेज
 सासन - सगती भंजन करगो ॥३८॥
 लखवाद लास उण लाखीर्ण
 हंस उठ्यो छोड़ मो माया नै
 भख देवण नै बळिवेदी पर
 आ डट्यो कटावण काया नै ॥३९॥
 हट हक्का-बक्का सैनिक हा
 भुखगी संगीना लाज धार
 हेठे मूंडा हा बांड्यां रा
 फूंकडा मानो आज हार ॥४०॥

सट स्वामीजी री अग्या सूं
 सान्तो सूं जुलस गयो आगे
 वो सायर गुहिर गभीर वण्यो
 लै'रां रो ज्वार वं'यो सागै १४१।
 दिल्ली री जामा मस्जिद सूं
 भासण स्वामीजी गजव दियो
 संकीर्ण भाव नै ताड़ - ताड़
 ओ खेल अजूबो अजब कियो १४२।
 है भाई हिन्दू - मुसलमान
 ओ आच्छो संखनाद कीनो
 अपरेल माह रै चीथे दिन
 सुभ प्रेम भाव बोयो भीनो १४३।
 सन उगणीसै उगणीस वरस
 वै वण्या दूत मानवता रा
 दट देस भक्ति रै दीवानै
 तागा तोड़्या दानवता रा १४४।
 भण हिन्दू - मुस्लिम अक भाव
 संकीर्ण भाव नै त्याग करो
 रट एक रटण आजादी री
 वस जळम भोम री भाव भरो १४५।
 पच्चीस ' दिसम्बर उगणीसै
 अधिबेसण अद्भुत भारी हो
 अमृतसर मे भेळा हुयनै
 वो सासन कड़ो प्रहारी हो १४६।
 घण जळियांवाळा री घटना
 मनडां में मायूसी झाई
 पण स्वामी जी री गूँज पड़ी
 मुरदां मरदानी हद पाई १४७।

जद प्रकृति परीक्सा लैवे है
कुण रोड़ा वण आड़ै आवै
पण उद्यमसीलाई रं चायां
हुय सूळ फूल खुसिया छावै १४८।
चौबीस दिसम्बर उगणीसै
वरसा रो जोर हुयो भारी
वै आसावां चकचूर करी
आभै फाटै नै किम कारो १४९।
पण आँधी पांणी - तूफानां
कद डगां भुखावै मतवाळा
पच पद - पर पर टक्कर पाणै
पण कद न भुखणा सतहाळा १५०।
फलकां पर सगळां मान हुकम
अतिथी सुख सूं घर ठै'राया
बस सफळ हुवैला ओ ऊछव
सहु जोसभाव मन लै'राया १५१।
हा स्वागतकारी स्वामोजी
सरकार डरपगी साँचाणै
चक्करकारक चक्कर टूट्या
टूट्या सह तागा काँचाणै १५२।
बां भासण दीनो हिन्दी में
कर मंत्रमुग्ध स्तोतागण नै
अंगरेजी रो वेसुरो राग
नी डिगा सक्यो वारै पण नै १५३।
वो सदाचार - नैतिकता रो
हो परवानो पावन मन रो
वो भासण हो इक दिव्य ग्यान
हो मंत्र खरो मानवपन रो १५४।

बां छद्मछन रो तोड़ काण
 उद्धार करण रो बात करी
 दळितां नै आगे लावण रो
 कथ मानवता है जात खरी १५५।
 वंघण तोड़ण नै सासन रा
 बां रो आतम रा भाव वै'या
 कितरां दिन दळितां दुख पायो
 अणगिणती रा अपमान सै'या १५६।
 जद सिख्वां रं सत्याग्रं में
 भापण गूँज्यो भू - अम्बर में
 वै उन्नीसं मन बाइस में
 बुध बोल्या दमम दिसम्बर में १५७।
 अर याद 'गुरू रो बाग' करां
 बां नै कारा में पूगाया
 हुय गिरफ्तार स्वामीजी हँस
 भूँड़ो सत्ता नै सूगाया १५८।
 भल सामिल हुयग्या स्वामीजी
 जद हिन्दू महासभा सागं
 दळितां रो दसा देख दुख सूं
 बां ना.ो तोड़्यो उण सागं १५९।
 अर अलग रूप सूं दळितां रो
 वां सरू करी सेवा करणी
 वै जुटग्या भट सांचे मन सूं
 वं वीर बण्णा देवा वरणी १६०।
 नवलीग हुयो आन्दोलण जद
 घण मुसलमान बणने लागे
 पूठा सुघ किया आगरै रा
 अर भरतपुर लागे पागा १६१।

बां परिवर्तन करणवाळां
 हिन्दू - हिन्दूपण त्याग कर्यो
 पण स्वामीजी रो कर्मठता
 भल आर्यधर्म अनुराग भर्यो ।६२।
 बां पांच लाख नै मुघ कीनी
 अर आर्यभाव में लीन हुया
 कर आर्य धर्म रो सखनाद
 वै कदै न पण गमगीन हुया ।६३।
 वै कदै न डरिया चालां सूं
 भुखणै रो कदै न चाल चली
 वै भगत खरा हा सद्दालू
 बस आग - माण ही भोळ भली ।६४।
 पण होणी रूप अरूप घर्यां
 देखावै निय रो रूप गजब
 बा आवै वादै पर निहचै
 अणचीती घर्यां कुरूप अजब ।६५।
 वा काया नै छोड़ै कोनी
 कितरा नर - नार उपाव करै
 बा फट्टा फट्ट अर बड़बडाट
 मानव उण पंज हेठ मरै ।६६।
 पण उण जस नै कुण मार सकै
 जिण बलि देदी वळिवेदी पर
 जिम मख में आहूती ज्वाळा
 भड़काळ कळुपियो छेदी भर ।६७।
 तेवीस दिसम्बर दिन आयो
 वो काळदूत स्वामीजी रो
 सन उन्नीसी छब्वीस अरे
 हो अमरदान दानाजी रो ।६८।

अब्दुल रसीद मुद्दी - खातर
 घोखें री मन में घात भरो
 आयो कपटी पापी - भूँड़ो
 काळख री लुच्चें बात करो ।६६।
 वै फायर कीना घड़घडाट
 कोमल काळजियें वार किया
 दागी गोळ्यां त्रय दागीलें
 स्वाम जी इण जग पार थिया ।७०।
 स्वामीजी जग सूं राम कियो
 कै राम नाम जग में करग्या
 आंसूडां भरती आंखइल्यां
 पण वै ज्वाळा मख में भरग्या ।७१।
 कस दुस्ट छैकळा तीन किया
 सागर पर तिरतें पोत बीच
 स्वामी बेड़ो आजादो रो
 अब्दुल रसीद हो कोत नीच ।७२।
 वै लेखक हा प्रतिभासाळी
 सेवक नेता हा संन्यासी
 हा आर्य - संस्कृती रा पोपक
 हा मिनख धरम रा विन्यासी ।७३।
 अब्दुल रसीद फांसी पाई
 वै जरम कियो मुजरम भारो
 वै थोखें सूं पन्नग पकड़यो
 वै दानव मानवता भारी ।७४।
 जद स्वामीजी री सीख धार
 मानव मानवता पावैला
 तज भेद-भाव भूँडा टंटा
 संगीत प्रेम रा गावैला ।७५।

आजादी रो इतिहास घड़ण
 सँ भारतवासी त्यार रह्या
 वां अतीत गौरव माण करण
 पूरखां ज्यु तन पर वार सह्या ।१।
 हा सिध केसरी धारठजी
 सगळो परवार सुवायो हो
 वै आण राख नीं भूक्या कदै
 जिण कदै न सीस भुकायो हो ।२।
 वै क्रान्तिकारणा वीर - वीर
 ज्वाळा रा पुंज जीविता हा
 वै फौळादी वपु नै धार्यां
 विसघूंटी ज्वाळ पीवंता हा ।३।
 वां चक्कर दीनो मासन नै
 बहुरूप धारणा जोगी हा
 वां घर - प्रिस्ती सूं छोड़ मोह
 नी दो मूंडा बोगी हा ।४।
 पण फेंफायोडां अँगरेजा
 चकरीवम अक्कल खाई ही
 आजादी रं दीवानां नै
 सीधै - सादै कद पाई ही ? ।५।

उन्नीस बरस भूमितन रह
 जोरावर सासन विदकाया
 सन उन्नीस सौ उनतालिश में
 पा सुरग फिरंगी पिदकाया ।६।
 वां यज्ञथळी रा होता वण
 जजमान वण्णां नियन वारे
 बळिवेदी मार्य भूपट - लटक
 मायड रा काज सह सार ।७।
 वै सपरी मोत मरण जाण
 नी पीठ दिखावे आराण
 श्रीसर आयां अरियां साण
 रोऊं फणघर सींधू गण ।८।
 वीरां रो फसल अठे होव
 भूमि आ मरदाभांवाळी
 है कुण कैवै ऊजाड घरा
 आ घरा माण राखणवाळी ।९।
 इण ही उपजायो है प्रताप
 गीरो - वादळ चुंडो हगीर
 इण ही माटी में जिळम लियो
 जेमळ - पत सम अमर वीर ।१०।
 पदमणी प्रल वण पळभर में
 वण गई भस्म रो डेर अठे
 कह रहणो खडो चितोड-थंभ
 कुंभा जंडा भट फेर कठे ? ।११।
 राजस्थानी इतिहास गवा'
 इतिहास मांडणा वीर खड़ा
 । तरवार - कलमड़ी हायां में
 साहित्य - चितारा तीर बड़ा ।१२।

चारण - वारठ चैताणां चर
 वै कसाघात करणा खारा
 जद कायर भागण मता करे
 उण वेळा पै मरणा सारा ११३।
 वै खुद असिघावण प्रलै माच
 वीरां री जोती बणं सदा
 वां रै रैवंतै भाराणै
 गीदडिया सीहा हणै कदा ११४।
 आजादी री श्री - रचना में
 राजस्थानी हद नांव कियो
 वारठ - कुळ (रा त्रय ऊजागर
 त्रय देव कदै नी दांव दियो ११५।
 हा देव तीन वै दिव्य हदां
 सहु सिंघ वीर अर। मतवाळा
 केसरीसिंघ - जोरावर जी
 सांगै प्रतापजी सतआळा ११६।
 तीनां हो कीनी तकरारां
 तीनूं स्वाहा हुयग्या जग में
 भाई - भाई अर बेटै री
 तीनूं बळि हुय सुयग्या मख में ११७।
 वारठ - परवार अगाऊ हो
 हेंस - हांस मीचु सूं लड़नै में
 नीं पाछ कदै तीनूं हुवणा
 फांस - फांस सुळिपां चढणै में ११८।
 जागीर - हवेळी छोड़ सुखां
 वां क्रांतिकरण मग पग घरिया
 तीनां री सला' अेक - सी ही
 नीं सूळी - फांसो सूं डरिया ११९।

दिल्ली में गया वीरवर दो
 काका भतीज री वर जोड़ी
 जोरावर सिधजी अर प्रताप
 मौकं पर जाय वम्ब फोड़ी 120।
 जद वायसराय हारडिंग री
 असवारी नितरी दिल्ली में
 बुरकाघारी काकं वा'यो
 वम फटाक फूटयो खिल्ली में 121।
 घायल सट वायसराय दीठ
 चट चररमरर चरमायो हो
 स्काटलैंड यारड सगळो
 फट मररमरर भरमायो हो 122।
 नी पकड़ मक्या जोरावर नै
 जद सगळों री प्रब चूर हुयो
 भज अकल भुवाली भैसाण
 वो बूंद सारखी सूर चुयो 123।
 चट राज फिरंगी चकरायो
 हाजर हवकावकका हुयग्या
 घबड़ाया हाकळ - बाकळ घण
 नाजर छक्का - तक्का सुयग्या 124।
 सिध जेळ केसरी खाट रह्या
 वेटाजी आम सुलगता हा
 जागां - जागां फिर धूमघाम
 नव जोत जळाय मुळकता हा 125।
 जद आसनाड़ ठेसण माथं
 इक रोज खड़ी हो वर प्रताप
 ठेसण - पति छद्मवेस चीन्यो
 पकड़ाया कीनो पाप घाप 126।

घोखे नाहर वंधण पड़ग्यां
 वो तोड़ण चाहै जंजीरां
 बाईस वरस री छोटी वय
 कुण देता कारां खंजीरां ।२७।
 कितरा दुख दिया कसायां कटु
 कर साम - दण्ड -दम भेद किया
 आस्वासण रै बफकारां में
 उण वज्जर - हिरे न छेद बिया ।२८।
 भोसण कस्टां नै सह - सहनै
 मणि-कंचन-काया तत्त्व मिळी
 बाळक प्रताप री लघु वय में
 सत सत्त्व सत्त्व सूं तत्त्व मिळी ।२९।
 हा ! पितरी-हिय टुक-टुक हुयो
 पण कदै न कायरता व्यापी
 मनजळ छोड्यो काराघर में
 उण री हदां कद कुण नापी ।३०।
 जोरावरजी नै हद मिळिया
 श्री रासबिहारी जी साथी
 बस चकचम नैणां चाह बसो
 भइ चिणगार्यां उजळी छती ।३१।
 बम फेक बच्या बुरकाधारी
 पत्यर - पत्यर में आग भरी
 वै फौळादी सगतीसाळी
 वां मायड़ - दुघ नी दाग करी ।३२।
 जद भारत - भू यमथळी जठें
 कद राजस्थान रह्यो लारें
 जोहर - ज्वाळा री लारें उठें
 अंगरेज फिरंग्यां नी धारें ।३३।

मरणै-सपणै अण त्याग करण
 मायड-हित में कद पाछ करी ?
 भामासा हुयग्या दानवीर
 हा फळातरू सभ गाछ भरी ।३४।
 जद - जद आजादी रै जग में
 सात्रळ - दिखणा री चाह वरी
 तद जूगलकिसोर विडालाजी भी
 दे चैक यग्यकुंड़ घाह भरी ।३५।
 हनुमानप्रसाद जी री मैमा
 वै धरम भाव रा पाळी हा
 हा क्रान्तिकरण मग पग घरिया
 वै भल भावां प्रतिपाळी हा ।३६।
 वर जमनालाल बजाज वीर
 गांधीजी रा सच्चा संगी
 वै इण आजादी रै जग में
 रहोया हमेस अरु रंगी ।३७।
 करतां अणन्त सेवा मां री
 कर त्याग नांव अर विणां नांव
 वै नीव वणया वज्जर वणनै
 आजादी रा हळ वणया पाव ।३८।
 मायड रै चरणां सीस थाप
 वां फरज उतार्यो खरो - खरो
 हँसतां - हँसतां वै बळि हुयग्या
 वां करज उतार्यो सरो - भरो ।३९।
 पण होणो हाय हबीडा दे
 नी आसै - पासं वा देख
 वा आयां वळ्यां खबीडा दं
 नी सज्जण - दुरजण वा पेल्ले ।४०।

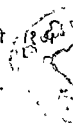
कुण उण पूतां रो होइ करे
वै राह दिखावण श्राया हा
बां कदे न धन-जस चाह करी
वै ही सगळां रा चाया हा १४१)



- महामनाजी पूत आतमा
 सत्य भाव रा सांचा साखी
 वाराणसी विश्वविद्यालय
 भारत मां री गरिमा राखी ११।
- आजादी रें वीर सिपायां
 सिक्सा पाई उण में गै'री
 महामना श्री मालवीयजी
 दिव्य पुरस हा सच्चा लै'री १२।
- जिण री अमर पताका फैं'री
 गण गावणी मं'मा भारी
 आजादी रें दिव्य हवन में
 वळि दी सुख - वैभव री सारी १३।
- छोड़ वकालत आछी चलणो
 वीर समं री मांग विद्याणी
 आजादी रें खातर हृदणी
 सत्यवचन कर निरमल वाणी १४।
- खूब जूझीया हेमाळो वाण
 स्वच्छ भाव री पावन गंगा
 सच्चा पावक खूब चमकिया
 दळ - वळ जूझ्या जिप्पण जंगा १५।

राजाजी अर वीर विनोद्या
 जै प्रकासजी आर्ग आया
 लालबहादुर पटेल वीरां
 आजादी साकै रंग लाया ।६।
 जद पूर्ण स्वराज्य री मांग करी
 लाहौर हुयो प्रस्ताव पास
 सन उन्निस रै छैकड़लें दिन
 हो नैरूजी रो भाव खास ।७।
 छब्बीस जनवरी तिस सन रो
 आजादी रो दिन थाप दियो
 सगळें भारत खुल खूसो करी
 आसा - विस्वासो छाप दियो ।८।
 तद नमक नेम नै तोडण नै
 दडी जात्रा भट आप करी
 छव अपरेल तीस सन में ही
 घरणा वंदी हद धाम करी ।९।
 सह - विनै अवग्या आन्दोलन
 जद जोर पकडतो जावें हो
 अर बीच विळाबत सम्मेलण
 वो गोळमेज कौलावें हो ।१०।
 इरिवन - समभोतो हुय प्रसिद्ध
 सप्रू - जैकर रै कौणां सूं
 अर छूट्या नेता दाढ़ाळा
 पण बात वणी ना वेंणां सूं ।११।
 हा भीमराव जी भीम जठे
 किम भूल सकां इण रचना में
 जगजीवन राम हरख मन सूं
 जिण किया - काम संरचना में ।१२।

पंचाट मेकडोनल्ड हुयो
 जद काँगरेम में फूट भरी
 बल्लभ भाई अर राजाजी
 राजेन्द्रप्रसादजी कूट करी ११३।
 पण ने'रूजी संग नेताजी
 इण रं विरोध में राय करी
 वं वाम पंथ रा हा साथी
 ना उणां मनां आ दाय भरी ११४।
 जद क्रिप्स - योजना बीयाळिस
 नेतावां रं सामी आयी
 मट पाकिस्तानी मांग मानणो
 पिछ्वाडें सूं आणे पाई ११५।
 नेतावां नै दाय न आई
 जणं मांग कोती ठुकराई
 जद सफल ना हुया क्रिप्स जी
 विफल हुया वां करी विदाई ११६।
 जद बीयाळिस सन जोस भयो
 'भारत छोड़ो' री गूँज उठी
 अँगरेजां रा हिवडां कांप्यां
 सगळां काळजियां धूज भरी ११७।
 भट दूर हटो दुनियावाळां
 म्हांर इण सपरें भारत सूं
 किण ही सूरत इव नी संवा
 म्हे पिड छुडासां गारत सूं ११८।
 म्हे करां - मरां ओ भाव धार
 इव रुद्र रूप दिखळावालां
 नी फाकी में थारी आवां
 हक सीने रं बळ पावांला ११९।



आ सुणी घोसणा हाक भरी
 अंगरेजां कुट चाली चाली
 अणवध करो भट कांगरेस
 पकड़ा पकड़ी कीवी काली १२०।
 पण राममनोहर री चालां
 अंगरेजां नै तग करणो ही
 कृपलाणी पारं जिम नर हा
 रीतै घटकां नै भरणी ही १२१।
 कस्तूर मुबासित कस्तूरो
 सन चम्माळिस में घाम गया
 गांधीजी हद वीमार हुया
 जद जेळ घाम सूं मुगत किया १२२।
 मन पैताळिस में वंवल सूं
 उण प्रस्तावां मत भेद थियो
 पण मुगत हुया नेता सगळा
 सिमला - समभोतो खेद वियो १२३।
 श्री रासबिहारो हा बांका
 तज घर-प्रिस्ती रो-मोह जाळ
 छोड़ी चलणो वाकालत नै
 अंगरेजां खातर वळू - काळ १२४।
 आजाद फौज रै दोवानां
 आजाद हियै रा मतवाळा
 कानून - रूप वुध कानूनां
 बां पार किया हद - खळबाळा १२५।



जद पूतां और सपूतां रं
मन रं भावां घमरोळ मची
भारत - भू नं आजाद करण
दुड निस्चं री मच लगन सची ११।

जद हिंसा और अहिंसा रं
पथ बीच भयो तरणी पाणी
हद तूफानां रो वातचक्र
घिरतो दीठो दुःखां - साणी १२।

रण तमोतम रं भारगियं
सहु हाथ - पांव फूलण लागा
रोलट जिसडे कानूनां री
भण याद चैन चीकड़ भागा १३।

सहु जळियांवाळो काण्ड सिंवर
रग - रग में रगत रक्त राच्यो
भांखड्यां हुयगी लालचट्ट
मन घुमड़-घुमड़ खळबळ माच्यो १४।

पूरब - पच्छिम रो पथ राही
उगतां काळोतम छेद करे
निय करां पसार्यां कुन्त-नखां
दिन में दिनयर दिव भेद भरे १५।

ज्यूं - ज्यूं आगै रथ वहन करै
 सूरज रो तेज हदां भारी
 ब्रिख रो तरणी तमतमाटणो
 कुहरै रै वैरी बळिहारी ।६।
 किम सूरज रै ऊगन्त टिकै
 कुहरै रा बादळ दूखणिया
 वै श्रेक भपट्टै भसम होष
 थर थर कांपै जग सूकणिया ।७।
 तरणी रो तेज गण दीसै
 चमचमाट करतो सुखकारी
 सगळी आसावां पूर सरै
 हरखावै सगळां नर - नारी ।८।
 जिम श्रेकळ द'दां चूर करै
 सेळां रो घण घमरोळ सह्यां
 नी पीठ दिखाणो अरि आगै
 मस्ती मस्तानी डोल कर्या ।९।
 जद सकट हिचका खाय-खाय
 इणगी - बिणगी डगमगी गुडै
 तडै - खडै भट घवळ तणी
 पर्ण कदै न उळटी राह मुडै ।१०।
 नाहर नै कद कुण जोत सकै
 कुण उण रै मूंडै रास घरै
 इसडो कुण जायो पून जमी
 अंगारां सूं किर्म हास भरै ।११।
 जद आसावां हुय चूर - चूर
 हिय बीच निरासावां जामी
 पट्टाभीजी नै कर परेस्तं
 नेताजो बागडोर थामी ।१२।

वो खून उबलते रो सीरू
 रकितम काया कंचन वरगो
 इतरो साहस इतरी सगती
 मायड़ - भगती रग - रग भरगी ११३।
 उण नांव ख्यात हुय खूब फळ्यो
 नेनाजो नेता सुखकारी
 वो अतुळ वळां रो भव्यरूप
 वार्यां उण पर सह नर - नारी ११४।
 हो वज्जर - गात मोम हिरदो
 दुख देख न सकियो मायड़ रो
 आंसू भेटण नै लोही दे
 घन फरज निभायो जायड़ रो ११५।
 उण कह्यो न करसूं नोकरडो
 सह सुणलो राज फिरंगी रो
 नीं धार गुलामी डू पग बेया
 नी चालू चाल दुरंगी रो ११६।
 नीं जीणें में भद्रक नर - नूं
 मायड़ रै थण नूं चूंटण में
 धिक कायर पूत कपूतां धिक
 धिक परवस ऊमर खूटण में ११७।
 वें कदे न पद री चाह करी
 वो जन - जन रो हो हितकारी
 वातां में अकज न समै खोय
 वां काम कियो ऊजळ भारी ११८।
 वां चेत चेतना खूब भरी
 हुंकार करंतां हाक बीच
 थे खून करो बगसीस मनै
 आजादी रुखां सींच - सींच ११९।

हूं स्वतन्त्रता री जोत दीप
 रीचूला ऊजळ रगत - तेल
 इण सिर जाणी रं सीदे में
 ओ खूब अजूबो अमर खेल १२०।
 इक कतरो लाय लगावं इत्र
 चिणगारी रूखां बाळ - बाळ
 बस खून - खून री अक रटण
 हूं काट फिरंगी कुटिल चाल १२१।
 जद सिघापुर री सभा बीच
 सिध गरज करी हुंकार कड़ी
 इतिहास लिखण आजादी रो
 दो - खून - खून इण कड़ी घडी १२२।
 ओ कागद आगं करूं आज
 कुण कग्ज उतारें माता रो
 निय तन रो पूत रगत इण पर
 जग निरणै करसी दातारो १२३।
 आजादी रो इतिहास नही
 काळी स्याही लिख पावैला
 इण कारण सहू सुणलो भावां
 रत नदी बहाई जावैला १२४।
 हर समे कफण माथे वाध्यां
 कुण सामो आवे पग मांडे
 सिर लेना - देणो सोदें सूं
 कुण टक्कर लेवें कर खांडे १२५।
 थां में है जोस खूब भरियो
 हूं जाणूं थारें भावां नें
 थे सगळा जोगी बण्या खडा
 बाळ्यां सगळी इच्छावां नें १२६।

रट एक भाव है सगळ्यां रं

मन में सगळ्यां तूफान भर्यो
रवी प्रनै माचणा हो सगळा

जम नी ठं'रं हुंकार डर्यो १२७।

थे तोड़ सको चट्टानां नै

तूफानां री गति रोक करो

थे पिमुणां नं भट खूँद - खूँद

मायड रं भोळं खुसी भरो १२८।

श्रं रगत मड्या आखर हुयसी

सोन हीरां सूं अघक मोल

कुण होड़ करेला भागत री

बोलो, बोलो सहु खरो बोल १२९।

यात्रू मुभाप आ वात कह्यां

कागदयुन हाय वधाया हो

वस देर उठे ही किण विध री

सगळ्यां मन जोस सवायो हो १३०।

म्हे देसां - देसां खून खूब

लालीयुत दीवां आब करां

ओ व्यथ पुटंग न जावेना

सिन्दूर मात री मांग भरां १३१।

कागद पर कागद लाल हुया

पण भीड़ ऊमड़ी नदी जेम

आगे ही आगे बढ़ती वा

सुभ भली सुलपणी हुई टेम १३२।

सहु बोल्या सांचो नेम करां

आजाद मात नै करणै रो

नी भुखां - फिरां सामे जम रं

म्हे नेम करां रण मरण रो १३३।

की है मजाल गादड़ियां रो
 नाहर री मूँछ मरोड़ करे
 कुण सामी दिस्टी करे दुस्ट
 भड़ भाड़ें रूख करोड़ भरें ॥३४॥
 थां रै जीवन्ते नेताजी !
 हुयसी आजाद भोम म्हारी
 कितरा छळ - कपट करे कूड़ा
 वारें था पर जग बळिहारी ॥३५॥
 थे लाल मुलपणा हो थाती
 म्हारी आँखड़ळ्यां रा तारा
 था पर म्हे सगळा न्यौच्छावर
 थे प्राणां सूं प्यारा म्हारा ॥३६॥
 थां रो पड़सी पद श्रेक जठें
 म्हारा सहस सिर जाकैला
 थां रो वस श्रेक इसारो हो
 सच नई रोसनी लावैला ॥३७॥
 थे भारत - भू रा वाकड़ळा
 वांकड़ळा वीर सवाया हो
 थां ऊपर मायड़ वळिहारी
 सत सूरज सीस नवाया हो ॥३८॥
 जस हिन्द केसरी केसर जिम
 थां री मं'मा उत्साकारो
 थां प्रलयकर हुंकार क्रिया
 वन्दण सिस्टी करदे सारी ॥३९॥
 तन तप्त सूर्य नै मात करण
 है दिव्य नूर चमकणवाळो
 इण साखी वरदी भव्य छिप्यो
 वै'वै जिण इंगित रत - नाळो ॥४०॥

थां रो इक नांव सुमरतां ही
 मुरदां में जिन्दगानी छावें
 थां रो लख वीर सुलपणो तन
 सगळी कायरता मर जावें १४१।

थां इसड़ी जोत जळाई थिर
 मा ऊजनराह घड़ी चोखी
 थां दीप - सिखा इसड़ी थरपी
 भाग सगळी काळख दोखी १४२।

आजाद फौज रें पद प्रताप
 पद चिन्हां छाप इसी गांणो
 जय हिन्द - हिन्द जय रो नारो
 मुरदां मे मनु जीवण ठाणी १४३।

आजाद फौज रो दीवानो
 आजाद फौज रो शुभ वांणो
 आजाद हुवड़ रो जोत जळा
 नूतन प्रकास लाली तांणी १४४।

जद सभा विसर्जित हुई भला
 नेताजी - काया दमक उठी
 जय हो जय हो नेताजी रो
 सासन रो उण मूं चमक छुटी १४५।

प्रकासी स्वतन्त्रता री जोत

9

दूजें जुध में अँगरेजां री
सत्ता डिगती ही जावें ही
जद फौजां हार फिरंगी री
घण ठोड़ां मुंह री खावें ही ।१।

आजाद फौज हद हावी हुय
बीजी फौजां पर छावें ही
नेताजी री न्यारी कमान
थागै चढ़ती ही जावें ही ।२।

भंड हीमन जोस घणो भरियो
अँगरेजां बुध चकरावें ही
बांका बीरा लंकाळा सूं
सुहणां में ही डर खावें ।३।

आजाद फौज आगे बढ़ती
आसाम सीव लगलागं ही
कितरी सी सीव बाद रहगी
आजाद नीव तरु ताकें ही ।४।

चम्माळिस में ही भारत रो
सौभाग्य सामनें आवें ही
पण जापानी दुरभाग सांतरो
दुःखकारी दुख छावें ही ।५।

जद दोय मोरचां मांथे वा
इम्फाल - कोइमां रे थाणां
जापानी हार मान सुयग्या
डाकी ब्रीटस हुयग्या खाणां १६।
जापान समरपण जद करियो
परवस आजाद फौज हुयगो
हा ! आसावां चकचूर हुई
अरमान दसा कसमस सुयगी १७।
जद लालकिन में ढोंग कियो
अभियोग चलायो वीरां पर
खोटा - भूठा नीं दका डरे
भड़ भिड़े चालणां खीरां पर १८।
सन पैताळीस नवम्बर में
जद हुई कारवाही जारी
सेनाणो सही वात अड़िया
भूठी सत्ता पढ़गी सारी १९।
कद डर्या मोत सूं मतवाळा
कट भीचु सदा ललकार करे
हँसता - हँसता जा आरणं
वण रुद्र रूप किलकार भरे १०।
बां जुग्म कियो हो नी कोई
वस स्वतन्त्रता री चाह करी
जुलमां - सासण सूं टक्कर ले
नी निय कस्टां सूं आह भरी ११।
आखर में गिरपजार कीना
मायावी - सत्ता - मक्कारां
फण पण फणधारा फूंकार्या
वीणा रे मत्ता वक्कारां १२।

आजाद फौज रँ वीरं पर
 भूठा अभियोग लगाया हा
 फाँसी देवण री चालां फण
 सहु निममां परा भगावा हा ११३।
 डिल्लन-सहृगल अर सा'निवाज
 मुळजिम वण सामे आया हा
 भूला भाई नियमां - नाहर
 कानूनी चक्कर लाया हा ११४।
 किम नून साब'री चलती जिद
 भूठां रँ पाँव नहीं होवें
 भूठां सावसी नीं ठै'र सक्था
 जाणं खोटा मिणिया पोवं ११५।
 सरकार उळभतो जावें ही
 सरकारी पक्क रगड़ खाई
 सिध पकड़यो भीदड़ री गत-सी
 निय भूँडें लक्षण जकड़ पाई ११६।
 आखर वं मृगत हुया तीनू
 तीनू अळवेळा देव तीन
 भारत रो सपरो दिव्य भाग
 वां सतपथ राखी टेव कीन ११७।
 धिन - धिन भूलाभाई जी धिन
 थे कानूना रा नाहर हा
 थां कानूनी जवड़ां विच मूं
 तीना नै काह्या बाहर था ११८।
 जद हुयो चुणाव विलायत में
 मजदूर पारटी जीत गई
 सरकार अटली भार सांभ
 चालण चाही निय नीत नयी ११९।

भारत की ख्यात करण खातर

इक केबिनेट मिसन आई

पावांला इव आजादी भूट

सुण आसा की किरणां छाई १२०१

सतदोय पांच रै वरखिलाफ

जद लोग अल्पमत में थाई

पण लोग अड़ाई टांग परो

कुल तेवत्तर सीटां पाई १२११

अर दंगा भड़क्या भड़भड़ाट

सहु सम्प्रदाय - विस जोर थियो

घड़घड़ाट मारकाट माची

माउंटबैटन पंचाट कियो १२२१

जद ब्रीटिस संसद एकट कियो

हा ! टुकड़ा भारत रा हुयग्या

मायड़ रा लाड़कुंवर भिड़-भिड़

सगळा नाता - रिस्ता सुयग्या १२३१

अंगरेजां की खळ भूंड नीत

माता रा खंड टूक करिया

आ विगत विदारै हिवड़ै नै

टावर - नर - नार कूक मरिया १२४१

ने'रुजी नै भल संभळाई

सासन की वागडोर सारी

जिण कियो समरपण सुख जीवन

हा पंडितजी हीमतकारी १२५१

भाई - भाई बंटवारो कर

चाअ्रे दीवार खड़ी करलै

पण भाव मनां रा निरमळ हुय

हिय प्रेम - भाव पाछा भरलै १२६१

पनरें अगस्त सैताळित नै
 सोनै रो सूरज उदित हुयो
 लाली लख प्राची लाल - लाल
 जन-जन रो मन अत मुदित हुयो ॥२७॥
 रूप सुलखणो राष्ट्र - तिरंगो
 जद मुगत गैण में कं'रायो
 आजादी रो सुभ वेळा में
 सरसित हुय सहु मन लै'रायो ॥२८॥
 आजाद हिन्द रो जै जै जै
 जै इण पर मरणवाळां रो
 जय राष्ट्र - तिरंगै रो जै जै
 जै बळि निय करणंआळां रो ॥२९॥
 जै स्वतन्त्रता रो जोतां रो
 जिण परकासो जोतो गे'री
 मन अंक भाव बळिमाग मच्या
 जिण कस्टा रो माळा पं'रो ॥३०॥
 भारत माता मुख वेंण भर्या
 हू अखण्ड हूँ अखण्ड रै'ऊं
 आरत मन हुय मत डरपीजो
 हूँ प्रचण्ड हूँ, न खड सै'बू ॥३१॥
 म्हारै खातर थे खूब लड्या
 हूँ च हू थारी खुशियाळी
 फळ फून बगीचां खूब फळ
 खेतं सरसावं हरियाळो ॥३२॥
 सगळा हिळमिल आणंद पावं
 सगळा सुख-दुख में अंक भाव
 बस रिच्छकरण आजादी नै
 सगळा रो हुयसी सद् सभाव ॥३३॥

उत्तर-दक्षिण - पूरब - पश्चिम

है सगळों रो इकसार रूप
था रो मायड़ विस्तृता घरा
समझो थे म्हारो ही सरूप ।३४।
हूँ गदगद हूँ किम वण कहूँ
थां करज उतार्या मायड़ रा
जुग - जुग जीवो आसीसां हूँ
थे लाडकुंवर हो जायड़ रा ।३५।



ओ काव्य रूप मणि भावां रो
आजादी रो परवानो है
सहु वोर सुलप्रणा री गाथा
सपरो उजळो वरपानो है

वतन रै वास्तै

वतन रै वास्तै जीणो
वतन रै वास्तै मरणो
वतन री जिन्दगाणी वर
वतन रो माण घण करणो ।१।
इणी में जिळमियां वीरां
वघायो माण माता रो
कर्या हेंस सीस रो सोदो
धन्य है नांव दाता रो ।२।
हरखियो मात मन हुळस्यो
तिरंगो गगन बिच्च फेर्यो
खुसी सूं भूम 'जन - मन - गण
गावंता सदा मन लैर्यो ।३।

□□□

मानवां रो मानवां सूं
प्रमयुन मिळणो हुवै
आदमी हैवानियत सूं
एकदम न्यारो हुवै ।
आदमी इन्मानियत रो
रूप सर्वोत्तम वण
आदमी इन्मानियत सूं
रुन पुरुषोत्तम वण
रूप पुरुषोत्तम वण ॥

□□

